अज्ञातवास

(मुक्तक-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन

64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार

गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087

ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020

ISBN : 978-93-88781-22-0

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक

तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 150/-

AGYATWAS (MUKTAK) Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

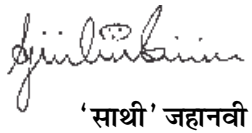

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

ऐसे भी जिया

वह बन गया दिया और मर कर जिया
रोशनी के लिये दिल जला कर जिया
कायनात ख़ुश हो जाये फ़क़त इसलिये
अपने चेहरे पर मुखौटे लगा कर जिया

जगहँसाई

ज़हरे जहान ज़लालत का पी कर जिया
जब शराफ़त की चादर ओढ़ कर जिया
शराफ़त और हक़ीकत की ज़िन्दगानी में
अपने पैरों पे ही ख़न्ज़र चला कर जिया

सुख़नवर

दर-ब-दर की ठोकरों में हँस कर जिया
एक सुख़नवर तहेदिल से बन कर जिया
वफ़ाओं की राहों में जफ़ाओं की मुश्क़िलें
बुरा वक़्त मेरा क्या क्या सोच कर जिया

---

1. कायनात=संसार **2.** फ़क़त=केवल **3.** ज़हरे जहान=संसार का ज़हर **4.** सुख़नवर-शायर

आदमखोर

इन्सानों का क़ातिल आदमखोर
वफ़ाओं का शिकारी आदमखोर
इंसाफ़ बेबस बेमानी औ लाचार
चश्मदीद की गवाही आदमखोर

भिखारी

दौलत की तमन्ना आदमखोर
रिश्तों में दौलत है आदमखोर
ख़ुशियाँ ब्याज से रोज़ हलाल
उधारी की किश्तें आदमखोर

नापाक इरादे

सहकर्मी की ज़रूरतें आदमखोर
अफ़सरों की रहमतें आदमखोर
हसीन ग़ुलबदन जवान पड़ोसन
पड़ोसियों की नज़रें आदमखोर

---

1. चश्मदीद=आँखों देखी

नाज़ाईज अरमान

धन औ दौलत के रिश्ते हैं आदमखोर
नाज़ाईज ख़्वाहिशें होती है आदमखोर
गाँव में गरीबी में सब कुछ राजी ख़ुशी
शहरों में सीमेन्ट के जंगल आदमखोर

ख़ुदग़र्ज़ी

पीठ पर ख़न्ज़र है आदमखोर
मतलब की पहचान आदमखोर
राम से रावण कभी नहीं मरता
अपने घर का भेदी आदमखोर

ऐसा भी कर दिया

चुपके-चुपके सबका काम तमाम कर दिया
इशारों-इशारों में सबको नाक़ाम कर दिया
अनहोनी को होनी करे वही 'साथी' का साथी
दिल ने उनके हौसलों को सलाम कर दिया

इन्सानियत

कुर्बानी ने नमक के दाम को बेदाम कर दिया
चर्चा-ए-आम-और-ख़ास ने बेनाम कर दिया
फ़र्ज़ के लिए जो नमक हलाल क़त्ल होते रहे
ऐसी शख़्सियत ने ही दिल में मक़ाम कर दिया

रहबर

मज़हब की हिफ़ाज़त में ख़ुद को ईमाम कर दिया
इन्सानियत में दिल से प्यार का पैग़ाम कर दिया
कायनात की ख़ुशहाली में हरपल हलाल होते रहे
भाईचारे के लिए तमाम उम्र का आराम कर दिया

दुनियादारी

अपने लिए दुनिया परिवार
उनके लिए दुनिया बाज़ार
रातों रात अमीरी के ख़्वाब
ग़ैर क़ानूनी होगा व्यापार

---

1. ईमाम=धर्म गुरु

सबसे बड़ा रुपया

चाचा औ भतीजा सरकार
वर्ना कौन अपना रिश्तेदार
ख़ुदग़र्ज़ी में गधा भी बाप
और फीताशाही की दीवार

ख़ुदकुशी

ख़ुद की जानलेवा रफ़्तार
भुगतेगा 'साथी' पूरा परिवार
हमेशा सिर्फ़ काम ही काम
ऐसी कमाई का बुरा विचार

बेगुनाह

साज़िशों में वो नाक़ामयाब हो गया
मेरा सवाल ही मेरा ज़वाब हो गया
बता कर अपनी बेगुनाही का सबूत
सारे ज़हान में, मैं लाज़वाब हो गया

सितमग़र

ख़ाना व पीना उसका ख़राब हो गया
दाग़दार ज़िन्दगी-ए-ख़िताब हो गया
ज़ुल्मों से हैवान और शैतान बन कर
वो जफ़ाओं की सारी किताब हो गया

मुहब्बत का अहसास

महबूब तन-मन में बेहिसाब हो गया
दिल औ दिमाग़ फिर बेताब हो गया
नज़रों से वो गायब क्या हुआ 'साथी'
जुदाई का वक़्त फिर अज़ाब हो गया

बेरहम ज़िन्दगी

अश्क़ों की दरिया उफान पर
दर्दो ग़म की लहरें तूफ़ान पर
बेवफ़ाइयों से ज़िन्दगी बदरंग
तन्हाईयाँ ख़तरे के निशान पर

---

1. अज़ाब = अभिशाप

बेवफ़ाइयाँ

ज़फ़ाओं से दिल तीर-कमान पर
शमशीर चलती दिली अरमान पर
मायूसी और उदासी बेरहम बैरन
ज़िन्दगानी दफ़न है शमशान पर

सितम

ख़ुशियों के घोंसले मकान पर
ज़ालिम शिकारी है मचान पर
परिन्दों की तरह गुज़र-बसर
दाना पानी नहीं है मकान पर

ज़लालत

हक़ीकत से सबके सब हैरान पर
सबका दिली-ऐतबार बेईमान पर
जो ज़माने के मुताबिक़ चला नहीं
वह मुँह के बल गिरेगा मैदान पर

---

1. ऐतबार = विश्वास

बदहाल ज़िन्दगी

ज़िंदगानी मासूम सवालातों से हलाल है
पापी पेट के ख़ातिर रोटी का सवाल है
तन को ढकने के लिए कफ़न तक नहीं
दफ़न होने के बाद मक़ामे क़ब्र बेहाल है

दौलत का असर

जो कोठियाँ ज़माने में रोशन व जमाल है
सफेद कपड़ों में गुनाहों का ही कमाल है
हैवान भी शर्मसार है जिनकी हरक़तों से
ख़ुदा को ऐसे इंसान बनाने का मलाल है

माँ की महिमा

इन्सानी शक़्ल में फ़रिश्ते का ज़माल है
चेहरे पर शराफ़त के नूर का गुलाल है
नालायक़ बच्चे भी गुनहगार नहीं 'साथी'
माँ की अदालत में ममता का कमाल है

---

1. ज़माल=सौन्दर्य

लाचारी

चेहरे पर जलालत बदनामी का गुलाल है
रोजी औ रोटी के लिये ज़िन्दगी बेहाल है
कोई यूँ ही नहीं बेचा करती है शबाब को
कभी मज़बूर तो कभी अपना ही दलाल है

दौलते मुहब्बत

मुहब्बत की दौलत ज़माने के लिये लुटाना है
ख़ुदा को उसके ख़जाने को हमेशा बढ़ाना है
मुहब्बत के रंग में ही रंग जाये जब कायनात
ऐसी कायनात में ख़ुदा को ख़ुदाई बरसाना है

मुहब्बत का मज़हब

धर्म की दरिया में अमन की कश्ती चलाना है
ऐसी कश्ती को तूफ़ान से साहिल पे लाना है
जुबान देकर क़ुर्बान हो जाये फ़र्ज़ के ख़ातिर
ख़ुदा को ऐसे इंसान को एहतराम दिलाना है

---

1. साहिल=किनारा **2.** एहतराम=सम्मान

हुनर की दौलत

अपने हुनर से वतन का नाम रोशन कराना है
ख़ुदा को ऐसे हुनर में ख़ास मक़ाम दिलाना है
सीखा दे अपना हुनर बिना किसी भेदभाव के
ऐसे भाईचारे पर ही ख़ुदा को प्यार लुटाना है

दिल दीवाना

दिल का लगाना बेकार सौदा नहीं
इन्सान ने इस नफे को सोचा नहीं
ज़िन्दगी दिल से ही जीने का नाम
दिल का ये हुनर सबको प्यारा नहीं

ख़ुशियाँ

शान व शोहरत से वह जीता नहीं
अपनों का जो फायदा करता नहीं
वह महरुम ख़ुशगवार आशियाने से
अपनों के जज़्बात जो समझा नहीं

---

1. नफ़ा=फायदा **2.** महरुम=वंचित

ख़ुदग़र्ज़ी

इज़्जत की ज़िन्दगी वो पाता नहीं
बेख़ौफ जो ज़माने से लड़ता नहीं
सब तोड़ते हैं परिवार की शाखायें
रिश्ते की जड़ में कोई जाता नहीं

मज़बूरी

इज़्जत और आबरू का निवाला नहीं
दिल को समझे ऐसा दिलवाला नहीं
सारे ग़म को जो बेगाना कर देती है
तवायफ़ के गजरे कभी वरमाला नहीं

दुनियादारी

शहर में चलना जरा सोच समझकर
घर से निकलना आख़िरी सलामकर
दुनिया से बेख़बर हो कर मत जीना
'साथी' बेघर कर देगी अपना बनकर

बेवफ़ा याराना

ग़मे जुदाई रिसती है नासूर बनकर
मुहब्बत करना दूल्हा दुल्हन बनकर
ग़र्दिश में ही दोस्ती की आज़माईश
दोस्त बनाना सारी मुसीबत बताकर

समझदारी

ख़ामियाँ ख़ूबियों के लिये सितमग़र
मुँह खोलना लफ़्ज को पहचान कर
दीवारों के भी अक़्सर कान होते हैं
राज़ बताना दिल में गहरे उतरकर

दीवानगी

तन्हाई औ जुदाई होती है सितमग़र
चैनो सुकूँ आता है बाँहों में समाकर
हम उम्र-दोस्ती मज़ेदार नमकीन है
तन्हा मत चखना खाली पेट बनकर

परख

ऐतबार करना कान के पक्के बनकर
बयान देना दिल की आवाज़ सुनकर
आँखों देखा हमेशा सच नहीं होता है
तहक़ीकात करना सब कुछ समझकर

ऐसा क्यों नहीं

ख़ास शख़्सियतों में वह शुमार नहीं है
उसके सर पर इल्ज़ाम बेशुमार नहीं है
छोटी मछली होती है बड़ी का निवाला
कोठी से ज्यादा बस्ती शानदार नहीं है

दुनियादारी

जिओ व जीने दो से ख़बरदार नहीं है
इन्सान को कायनात से प्यार नहीं है
ग़मगीन है जिसकी मौत पे सारा वतन
रोने वाला उसका कोई परिवार नहीं है

बेबस सुख़नवर

शायर की कलम असरदार नहीं है
ख़बरें बिके तो वह अख़बार नहीं है
दाद कैसे मिलती ग़ज़लों पर 'साथी'
ख़ूने दिल से लिखे अश्आर नहीं हैं

गुफ़्तगू

गुफ़्तगू ऐसी हो कि बहस ख़त्म होनी चाहिये
प्यार के पैग़ाम से दुश्मनी ख़त्म होनी चाहिये
बेकार की गुफ़्तगू करने में कुछ हासिल नहीं
माहौल बदलने की पूरी कोशिशें होनी चाहिये

जायज़

नाजायज़ खर्चे में भी मेहनती कमाई होनी चाहिये
कुछ खर्चों में दुआओं की तासीर भी होनी चाहिये
मरने के बाद हर कोई होते हैं जन्नत के हक़दार
कारनामों की भी कुछ तो तहक़ीक़ात होनी चाहिये

---

1. गुफ़्तगू=बातचीत **2.** सुख़नवर=कवि **3.** अश्आर=ग़ज़ल के शेर

ज़िन्दगी का फलसफ़ा

ज़िन्दगी में उम्र-ए-दराज़ बेमानी होनी चाहिये
ज़िन्दगी कम सही मगर बेमिसाल होनी चाहिये
ज़लालत की ज़िन्दगी से फाँसी के फंदें बेहतर
रोज़ी रोटी मेहनती कमाई से ही होनी चाहिये

तसव्वुर की तासीर

बेवज़ह की ऐसी बेज़ा तक़रार ख़त्म होनी चाहिये
दोस्ती के पैग़ाम से दिल में मुहब्बत होनी चाहिये
दिल और दिमाग़ से हर मसलों का हल मुमक़िन
ख़यालों की ताक़त बेहद ही मज़बूत होनी चाहिये

आम आदमी

रोटी के ज़वाब में वो हलाल ही रहा
पापी पेट का सवाल, सवाल ही रहा
उसे सबने ख़्वाब दिखाये ख़ुशियों के
सर पे तो साया आसमाँ का ही रहा

---

1. फलसफ़ा=चिन्तन **2.** उम्र-ए-दराज़=लम्बी उम्र **3.** बेमानी=अर्थहीन **4.** तसव्वुर=सोच **5.** बेज़ा=अनुचित

इन्साफ़

बग़ैर सबूतों के बाइज़्जत बरी ही रहा
बेगुनाह बग़ैर गवाह के लाचार ही रहा
गुनाह ऐसे कि दोज़ख भी नसीब नहीं
ज़माने की नज़र में इज़्ज़तदार ही रहा

तीन तलाक

तन व मन मज़हब से जख़्मी ही रहा
तीन-तलाक मज़हबी ख़ंज़र ही रहा
जख़्मी दिल उफ़ तक ना कर सका
सितमगर क़ातिल तो शौहर ही रहा

चराग़

भरी बज़्म में ख़ामोश व तन्हा ही रहा
बिना रसूख़ात के चराग़ बेनूर ही रहा
जलता ही रहा आँधी व तूफ़ान में भी
मगर चराग़ तले फिर अन्धेरा ही रहा

---

1. दोज़ख=नर्क **2.** बेनूर=अन्धेरा

क्या ख़ूब निकला

दंगे और फ़साद में जो सबसे महफ़ूज़ निकला
सारी कायनात में तवायफ़ का मकान निकला
ज़माना समझता तवायफ़ को तौहीने नज़र से
उसके दामन से ही तो चैन व सुक़ून निकला

शराफ़त की सच्चाई

तौहीन व ज़लालत में जिसका जीवन निकला
ज़हर का प्याला पीकर सुकरात अमर निकला
जिसकी ताक़त का लोहा सारे संसार ने माना
उस्तादों का उस्ताद लंगोटी में गाँधी निकला

मन मोहन

सबके तन मन पर राज करने वाला निकला
बिना ताजो तख़्त के जिसका जीवन निकला
किस से किस को नहीं मरवाया महाभारत में
बिना हथियार के बाजीग़र बंशीवाला निकला

सच की सच्चाई

इंसानियत में जीवन मौत से भी बदतर निकला
तौहीन व ज़लालत में जीवन तड़प कर निकला
जिस शख़िसयत की सबने सरे राह हँसी उड़ाई
खोज ख़बर में मेहनती, ईमानदार शख़्स निकला

दरवेश

ताज़ो तख़्त और दौलत से बेमुरव्वत निकला
शहँशाहों का शहँशाह ग़रीब नवाज़ निकला
लुटाता रहा ख़ुशियाँ व अम्न चैन के ख़जाने
मुहब्बत से अक़ीदतमन्दों का अम्बार निकला

क्या ख़ूब सिला मिला

मेरी चिता पर मेरे अरमानों और ख़ूबियों की लकड़ियाँ
सबके सब सेक रहे हैं अपने-अपने मतलब की रोटियाँ
लाख जतन किये मुझे बदनाम व बर्बाद करने के लिये
कभी हक़ीक़त नहीं होती है मतलबी व झूठी कहानियाँ

---

1. तख़्त=सिंहासन **2.** बेमुरव्वत=निस्वार्थ **3.** अक़ीदतमन्द=श्रद्धालु

नादान सितमग़र

सितमग़र कहाँ तक गिराते ज़ुल्मो जफ़ाओं की बिजलियाँ
किसी के चाहने से कहाँ ख़त्म हो जाती है ज़िन्दगानियाँ
ये सोचने को वो मज़बूर हैं कि कुछ ख़ास इल्म है मुझमें
तो भी वे तलाश रहे हैं,ख़ालिस सोने में बेवज़ह ख़ामियाँ

तौहीने क़ुदरत

पारस पत्थर में है लोहे को सोना करने की चमत्कारियाँ
मालूम थी उनको मेरे हुनर, इल्म व शख़्सियत की ख़ूबियाँ
कहाँ तक दफ़्न करके रखते नूरे आफ़ताब को तहख़ाने में
इन्सानियत के चराग़ से होती है अम्नो चैन की रोशनियाँ

रस्मो रिवाज़

प्रेम को लुटाना पाने की रस्म है
दर्द को बाँटना खोने की रस्म है
मिलन के बाद विरह की वेदनायें
एक दूजे के हो जाने की रस्म है

---

1. इल्म=ज्ञान **2.** ख़ालिस=शुद्ध

मज़बूरी

मक़्कार के संग में निभाने की रस्म है
फिर भी उसे शौहर मानने की रस्म है
तीन तलाक की तलवार सर पर रहती
बेज़ुबान हो कर दफ़्न होने की रस्म है

मोह-माया

उस को वारिस समझने की रस्म है
बदज़ुबाँ को बेटा मानने की रस्म है
वारिस के लिये पेट काटकर जीना
विरासत छोड़ कर जाने की रस्म है

दौलत का असर

बदज़ुबानों से भी रिश्ता निभाने की रस्म है
दौलतमन्दों के आगे सर झुकाने की रस्म है
लाचारी इन्सान से क्या-क्या नहीं करवाती
ज़मीर और ख़ुद्दारी को मिटाने की रस्म है

रिश्तों का सौदा

पढने और खेलने की उम्र में निभाने की रस्म है
सपनों को दफ़्न कर निक़ाह करवाने की रस्म है
सारी उम्र के लिये अनमोल कन्यादान कर दिया
फिर भी तो दहेज का सामान माँगने की रस्म है

रब की मेहर

ख़ुदा की रहनुमाई मिल जाती है अक़ीदत से
फिर कुछ क्यूँ मांगते हो ख़ुदा की इबादत से
सब अपनी-अपनी तक़्दीर लेकर पैदा होते हैं
किसी का हक़ क्यूँ मारते बेईमान ईनायत से

बदले की आग

बदले की आग में क्यों जलते हो बग़ावत से
पत्थर पिघलकर मोम हो जाते हैं जज़्बात से
कहाँ ज़रूरत है तीर, तलवार और ख़न्ज़र की
अच्छे अच्छे भी मर जाते हैं सिर्फ़ ज़लालत से

---

1. अक़ीदत=श्रद्धा **2.** इबादत=प्रार्थना **3.** ईनायत=कृपा

मुलाक़ात का फलसफ़ा

इंसान की तबीयत तो नासाज़ ग़मगीन ज़हानत से
मुलाक़ात नहीं करो ऐसी फ़ितरत और क़ैफ़ियत से
मिलने वाले के चहरे पे सुक़ून औ रौनक आ जाये
इसी तरह से गले मिलते रहो प्यार औ मुहब्बत से

रूहानी मिलन

ख़्वाबों और ख़यालों में मिलन के ख़यालात से
अक़्स के दीदार होते हैं तसव्वुर के जज़्बात से
सात समंदर पार का सफ़र मुलाक़ात में बेमानी
दूरियाँ नहीं होती रूह से रूह की मुलाक़ात से

इन्सान में ख़ुदा

ख़ुदा इंसान नहीं तो फिर ख़ुदा कुछ भी नहीं
इन्सान अगर ख़ुदा हो तो ख़ुदा कुछ भी नहीं
मुहब्बत की रंगत में रंग जाये कायनात सारी
तो मन्दिर-मस्ज़िद और मज़हब कुछ भी नहीं

---

1. नासाज़=ठीक नहीं **2.** फ़ितरत=आदत **3.** क़ैफ़ियत=प्रवर्ती **4.** बेमानी=बेमतलब

इन्सानियत

कोई हमदर्द नहीं तो शख़्सियत कुछ भी नहीं
ऐसी मतलबी ज़िन्दगी के मायने कुछ भी नहीं
सारी कायनात अपना आशियाना सा लगे तो
फिर ये रिश्ते नाते अपने पराये कुछ भी नहीं

हैवानियत

इंसान के दिल दिमाग़ पे असर कुछ भी नहीं
ख़ुदग़र्ज़ी के सामने इन्सानियत कुछ भी नहीं
घुट घुट के जीना या फिर मर मर के जीना
ज़िन्दगी ऐसी हो तो फिर मौत कुछ भी नहीं

हिम्मत

दिल-दिमाग़ में हौंसला तो डर कुछ भी नहीं
उम्मीदों के सामने तो निराशायें कुछ भी नहीं
दिल में जोश व जुनून की मशालें जलती रहे
ग़र्दिशों में गहराती अन्धेरी रातें कुछ भी नहीं

रिश्वत

जब सिपाही बेईमाँ मिला उसे
फिर थाना महफ़ूज़ मिला उसे
सुबूत औ गवाह भी बिक गये
ऐसा अन्धा क़ानून मिला उसे

आजादी

बग़ावत में गोली का निशाना मिला उसे
शहादत में कन्धों पर ज़नाज़ा मिला उसे
गुलामी की ज़िन्दगी पसंद नहीं आई उसे
फिर मौत में फाँसी का फतवा मिला उसे

दिल का रिश्ता

अपने ख़्वाबों का जब शहज़ादा मिला उसे
मुहब्बत का रिश्ता फिर परवान मिला उसे
रिश्ते के लिये तो एक-दूजे की रज़ामन्दी
फिर काज़ी हताश और निराश मिला उसे

बेबसी

ईमानदार होने का ऐसा ईनाम मिला उसे
हक़ की आवाज़ से नाइन्साफ़ मिला उसे
ज़माने के रस्मों व रिवाज़ की नाफ़रमानी
अपना घर और परिवार बेग़ाना मिला उसे

नाइन्साफ़ी

भरी सभा में अधर्मी खानदान मिला उसे
धर्म-न्याय अस्मत का लुटेरा मिला उसे
पाँच शूरवीरों की धर्म पत्नी होने पर भी
कायर व मक्कारों से अपमान मिला उसे

ख़ुदा का रहम

निर्मल और पवित्र दिल मिला उसे
ख़ुशियों से आबाद घर मिला उसे
जिसने भी पाक दुआ की दिल से
फिर ख़ुदा मेहरबान सा मिला उसे

---

1. नाफ़रमानी=आज्ञा नहीं मानना **2.** बेग़ाना=अपरिचित

आराम हराम

पिन्जरे का पंछी उड़ता कैसे
मेहनत का दाना चुगता कैसे
ग़र लालच बुरी बला न होती
तो मुर्गी का पेट फड़ता कैसे

नज़र नज़र का फ़र्क

बाबुल का सर शर्म व बदनामी से झुकता कैसे
नज़रों में रहकर के चुनरी में दाग़ लगता कैसे
सास व ससुर के दिल व दिमाग़ में बेटी होती
दहेज के लिये योग्य बहू का तन जलता कैसे

आरक्षण

आरक्षण के रंग व रोग़न से पीतल सोना होता कैसे
मज़बूरी ना होतो, सोना पीतल के भाव बिकता कैसे
इल्म औ हुनर किसी परिचय के मोहताज नहीं होते
मेहनती नूरे चराग़ आरक्षण की आँधी से बुझता कैसे

---

1. नूरे चराग़=दीपक की रोशनी

बेईमानी

आँखों पर ईमानदारी का नूर रहता कैसे
रिश्वत ले कर जाँच पड़ताल करता कैसे
सच परेशान हो सकता है पराजित नहीं
झूठ के पर्दे में चाँद व सूरज छुपता कैसे

असली सोना

जिसके पास भी होता है चाँदी व सोना
फिर उसका नहीं होता है चैन से सोना
इल्म और हुनर ही दौलत के ख़जाने हैं
दिन औ रात लुटाने पर भी कहाँ खोना

इन्सानियत शर्मसार

ज़ुल्म औ सितम की इन्तहा एक दिन होना
कभी न कभी तो आयेगा ज़ालिम को रोना
बेगुनाह जब मज़बूरी में गुनहगार हो जायेंगे
सुबूत और गवाहों से क़ानून होगा खिलौना

---

1. इल्म और हुनर=ज्ञान और कला

समझदारी

अपनी ज़रूरत अपने आप बनो
करें मन की मगर सबकी सुनो
बोलने से ज़्यादा सुनना ज़रूरी
बोलने से पहले शब्दों को बुनो

गुलामी की ज़िन्दगी

रहमो-करम के दाना व पानी से ज़िन्दा रहना
मज़बूरी में गुलामों की तरह से ज़िन्दगी जीना
गुलाम के जीवन में ऐशो आराम ही क्यूँ न हो
सोने के क़ैदखाने में आजादी के लिये तड़पना

ख़ुदा होना

सबका एक ही मालिक, ऊपर वाला होना
बिना भेदभाव बादल को सबको भिगोना
बुरे वक़्त पे सबकी मदद करने वाला तो
मददगार की नज़र में उसका ख़ुदा होना

मुहब्बत का असर

प्यार में यही नफ़ा नुकसान होना
दो-बदन का तो एक जान होना
ख़्वाबों व ख़यालों में सब मुमक़िन
मुहब्बत का जबसे आसमान होना

ग़रीबी की इन्तहा

जिसे नसीब नहीं है मिट्टी का भी खिलौना
ऐसे बेहाल बचपन में तो फिर रोना ही रोना
ऐसी मज़बूरी कि बिक जाये आँखों का तारा
बदन बेच कर भी दाल रोटी से खाली दोना

मेहनत में चैनो-सुक़ून

बेईमान का नर्म बिस्तर पे बेचैन करवटें बदलना
थोड़ी सी भी नींद के लिये दवा-दारू का पीना
मेहनतक़श मज़दूर हमेशा रहता है दीनो-ईमाँ में
सख़्त पत्थर भी हो जाता है उसका नर्म बिछौना

ख़ुदा होना

डूबते हुये के लिये तिनके का सहारा होना
बुरे वक़्त में जो साथ दे उसका ख़ुदा होना
प्यासे को अगर वक़्त पे मिल जाये चँद बूँदे
फिर तो बहता अमृत का दरिया भी है बौना

क़ुदरत का क़रिश्मा

कायनात में कोई भी तो किसी से क़मतर नहीं
क़यामत के दिन कोई भी किसी से बेहतर नहीं
ख़ुदा के रहमो करम तो सबके लिए एक समान
ख़ज़ाने-क़ुदरत तो किसी एक की ज़ागीर नहीं

क़ुदरत का इन्तज़ाम

क़ायनात के जैसा तो इंतज़ाम कोई नहीं
दाना-पानी सबके लिये भूखा कोई नहीं
क़ुदरत देती है सब कुछ लेती कुछ नहीं
दरिया और शजर जैसा दानी कोई नहीं

---

1. दरिया और शजर=नदी और पेड़

एकता

किसी एक गुल से तो गुलशन आबाद नहीं
एक इकलौता इंसान घर और परिवार नहीं
समंदर में दरिया का कोई वजूद नहीं होता
मगर दरिया के बिना समन्दर विशाल नहीं

औरत की मज़बूरी

औरत की ज़िन्दगी बेकार होती है
रस्म व रिवाज़ से लाचार होती है
मज़हब के क़ानून और क़ायदों से
रज़िया सुल्तान भी शिकार होती है

ख़ुदकुशी

आग में घी डालने जैसा विचार होती है
अपनी आबरू की ख़ुद गुनहगार होती है
चाल-चलन और पहनावा भी तो दुश्मन
अपनी अस्मत की ख़ुद ज़िम्मेदार होती है

बदनसीब औरत

अस्मत के भूखे लुटेरों से जो ख़बरदार होती है
अस्मत को महफ़ूज़ रखकर इज्ज़तदार होती है
उसकी बेहाल ज़िन्दगी तो दोज़ख से भी बदतर
वो ख़्वातीन जो ज़बरदस्ती की शिकार होती है

तन की सौदाग़र

अस्मत लुटाकर सारे ज़माने में समाचार होती है
ऐसी बदचलन औरतें ज़माने में नागवार होती है
जिस्म फ़रोशी औ नुमाईश जिसके शौक व पेशा
ऐसी पेशेवर औरतें चालाक और मक्कार होती है

नादानी में बदनामी

मर्द औरत के रिश्तों में उबले जोशे जवानी
ज़माने में बदनाम हो जाती है ऐसी कहानी
किसी को भी सूरत दिखाने के लायक नहीं
शर्मसार ज़िन्दगी है ख़ुद उनकी ही जुबानी

---

1. दोज़ख=नर्क **2.** ख़्वातीन=औरत

हीरो हो जाते जीरो

फ़िल्मी दुनिया के ताक़तवर हीरो
असली दुनियादारी में रहते जीरो
जब मुसीबतें ख़ुद पर आती है तो
ज़रूरत के वक़्त में हो जाते जीरो

बेईमानी की दौलत

अब तो ग़लत काम करना छोड़ दो अमीरो
सब कुछ यहीं छोड़कर मर जाओगे अमीरो
फ़कीर और ग़रीबों की दुआ में बेहद असर
सबाब के लिये कुछ तो ख़ैरात करो अमीरो

अहसान फ़रामोश

जिस थाली में खाया उसी में छेद किया
मेहरबानी का क्या ख़ूबसूरत सिला मिला
वफ़ाओं के बदले जफ़ाओं का सिलसिला
दोजख जैसी ज़िन्दगी का बदहाल बसेरा

---

1. सबाब=पुण्य **2.** दोज़ख=नर्क

असली अमीर

लुटाता है ग़रीबों पर, बहुत सारा हो जैसे
यक़ीनन ख़ुद भी कभी ग़रीब रहा हो जैसे
फुटपाथ पर सोता है इस तरह से बेख़बर
सारा आसमान उसका आशियाना हो जैसे

आईना

देखकर हालात को आग बबूला हो जैसे
सच्चाई का ख़ून रगो में दौड़ता हो जैसे
ज़ोश और जुनून दुनियादारी बदलने का
कच्ची उम्र में प्यार उफ़ान लेता हो जैसे

हक़ीक़त

ज़िंदा होकर भी ज़िंदा नहीं हो जैसे
ईमानदारी में तन-मन मुर्दा हो जैसे
दुनियादारी में शराफ़त की ज़िन्दगी
महफ़िल में ईमाँ तन्हा खड़ा हो जैसे

ऐतबार

प्यासे को दो बूँद पानी दरिया हो जैसे
डूबते हुये को तिनके में सहारा हो जैसे
सबके हाथ पीले होंगे व सब मुर्दे जलेंगे
जहाँ कोई नहीं होता वहाँ ख़ुदा हो जैसे

अस्मत ही ईमान

औरत का दामन बचाने से कम कुछ भी नहीं
नहीं तो जीवन दोजख से कम कुछ भी नहीं
ग़ैर के ख़ातिर अपने शौहर का क़त्ल कर दें
ऐसी ख़्वातीन तवायफ़ों से कम कुछ भी नहीं

ख़ुदा से कम नहीं

गर्दिशे मददगार फरिश्ते से कम कुछ भी नहीं
ऐसा दुश्मन भी फरिश्ते से कम कुछ भी नहीं
जो खो चुका हो ऐतबार अपने ही दोस्तों का
ऐसा दोस्त भी दुश्मनों से कम कुछ भी नहीं

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** दोज़ख=नर्क **3.** ख़्वातीन=औरत

इन्सानियत

ईमान का सौदा तिज़ारत से कम कुछ भी नहीं
इन्सान के रूप में दरिन्दे से कम कुछ भी नहीं
किसी पर रहमत करके भूल जाना बेहतर 'साथी'
इन्सान का ही ख़ुदा होने से कम कुछ भी नहीं

भाईचारे का क़त्ल

हिन्दू मरा न सिख और मुसलमान मरा
कोई भी मरा तो हमारा हिन्दुस्तान मरा
जिस का भी बहा ख़ून, रंग लाल ही था
मज़हब के आतंक में मासूम इन्सान मरा

बेबस ख़ुदा

इबादत अपने मतलब से तो ईमान मरा
दुआ मुकम्मल कर सारा आसमान मरा
ख़ुदा के यहाँ क्या-क्या करतूतें न हुई
शर्मो हया से बेचारा बेबस भगवान मरा

---

1. तिज़ारत=व्यापार **2.** मुकम्मल=पूर्ण

ब्याज की महिमा

किसान की दास्तान सुन कर शैतान मरा
गुलामी सह कर परिवार का अरमान मरा
पीड़ी दर पीड़ी चलता रहा लेखा-जोखा
कर्ज़ की वसूली में फिर कब धनवान मरा

पाक़ मुहब्बत

ताज़ो तख़्त व मज़हब तक इश्क़ में कुर्बान
इश्क़ में सुल्तान का बेमानी शाही फ़रमान
जुल्म औ सितम भी जुदा नहीं कर सकते
मुहब्बत में इतना होता है दीन और ईमान

राष्ट्रगान का अपमान

राष्ट्रगान को गाना ज़रूरी नहीं तो संविधान मरा
ऐसे संविधान से फिर तो राष्ट्रगान का मान मरा
जिसकी आन व बान औ शान पर हज़ारों शहीद
मगर संविधान में ख़ामी से तो फिर राष्ट्रगान मरा

अहम की मौत

बुरे वक़्त में दौलत के गुमान से धनवान मरा
बेक़ुसूर की बद्दुआओं से ज़ालिम शैतान मरा
वक़्त पे चींटी भी हाथी को चित कर देती है
कमजोर के हाथों से तो अक़्सर बलवान मरा

बदनसीब मुहब्बत

ग़मों के समन्दर में ख़ुशहाल मुहब्बत डूब जायेगी
आशियाने में फिर ख़ुशियों की बहार कैसे आयेगी
बेचैन और बेक़रार हो कर तड़पती रहेगी मुहब्बत
सुकूँ के लिए परेशाँ होकर वापस दिल में आयेगी

इन्तज़ार की इन्तहा

तमाम-उम्र इज़हारे इन्तज़ार में गुज़र जायेगी
इन्तज़ार की इन्तहा कभी न कभी तो आयेगी
ज़मीन पर साथ जी न पाये तो साथ मरते हैं
यक़ीनन उसे समझ उपर जा कर ही आयेगी

---

1. गुमान=घमण्ड **2.** इज़हार=कहना

कशमक़श

जिसका अहसास पूरी कायनात कर पायेगी
ऐतबार वो क़यामत के दिन ही कर पायेगी
मुहब्बत के राज़ को छुपाये रखने की अदा
कब तलक इस हुनर से ज़िन्दा रह पायेगी

उम्मीद

मन मंदिर में कोई भी सूरत कैसे आयेगी
दिल में तो दिल वाली दुल्हन ही आयेगी
यक़ीनन क़ोशिशें क़ामयाब होती हैं 'साथी'
कभी न कभी तो ना, हाँ में बदल जायेगी

ख़ुदग़र्ज़

किसी को नहीं कहने का हुनर नहीं आया
बुरे वक़्त पर मेरे कोई भी काम नहीं आया
मुहब्बत औ ख़ुशियाँ बाँटने से बढ़ जाती हैं
रंजिशें व नफ़रत भुलाकर कोई नहीं आया

मौक़ा परस्त

देखकर दुनियादारी कोई रहबर नहीं आया
मन्ज़िलों का जानकार हमसफ़र नहीं आया
पानी से कैसी शिक़ायतें और गिले-शिक़वे
प्यासे के लिये तो कोई समंदर नहीं आया

बेबस मुहब्बत

दिल की लगी को बुझाने कोई नहीं आया
मज़ार पर चिराग़ जलाने कोई नहीं आया
क्या करना ऐसी दिली मुहब्बत का 'साथी'
दिल पर दिल को लुटाने कोई नहीं आया

ख़ुदग़र्ज़

रस्मो रिवाज़ों से हर कोई बेबस नज़र आया
एक दूसरे के दर्द में हर कोई बेख़बर आया
वक़्ते मुसीबत में जब परखा ख़ास अपने को
हर तरफ तो बेवफ़ाई का मंज़र नज़र आया

---

1. रहबर=मार्ग दर्शक

कायरता

इन्क़लाब के जज़्बातों से कोई नहीं आया
फाँसी पर लटकने कोई शख़्स नहीं आया
जो इन्साँ डर गया समझो बेमौत मर गया
बेख़ौफ मौत से लड़ने कोई भी नहीं आया

अपने बेग़ाने

अपनों को जानकर तो अपनापन नहीं आया
परायों और अपनों में फ़र्क समझ नहीं आया
तबाह हो गया जिनके ऐतबार औ ज़ुबान पर
मुसीबतों के समय मेरे कोई काम नहीं आया

ख़ुदा का वजूद

ज़ियारतों को तिजारत इन्सान तय करता है
ख़ुदा का होना न होना इंसान तय करता है
ख़ुदा के अलावा और कुछ भी नहीं जहान में
बुरे वक़्त–औ–हालात में इंसान तय करता है

---

1. ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **2.** तिजारत=व्यापार

बेग़ानी ज़िन्दगी

तन्हाई व जुदाई के मंज़र इन्सान तय करता है
ख़ुदग़र्ज़ी की ज़िन्दगी भी इन्सान तय करता है
प्यार मुहब्बत से तो अब कोई गले नहीं मिलता
नफ़रतों की ये ज़िन्दगानी इन्सान तय करता है

बदहाल ज़िन्दगी

हम प्याला औ हम निवाला अपना कोई नहीं
मौत पर आँसू बहाने वाला अपना कोई नहीं
इस तरह जीने मरने से क्या फायदा 'साथी'
जब दर्दो ग़म का रखवाला अपना कोई नहीं

ख़ुद ज़िम्मेदार

जन्नत के दर व दिवार इंसान तय करता है
दोज़ख़ का आशियाँ भी इंसान तय करता है
दोजख़ में मौत से बदतर है हालाते ज़िन्दगी
बदहाली में ज़िन्दगी को इंसान तय करता है

---

1. हम प्याला=साथ पीने वाला **2.** हम निवाला=साथ खाने वाला

इन्सान का ईमान

मन्दिर मस्ज़िद में फ़साद इन्सान तय करता है
मज़हबी रन्ज़िश व नफ़रत इंसान तय करता है
सारे मज़हब पाक़ साफ और मुक़द्दस है 'साथी'
क़ौम को बदनामी की राह इंसान तय करता है

बेहाल जीवन

ज़िन्दगी की ज़ियारत को तिज़ारत करना है
भाग दौड़ वाली ज़िन्दगी में थकना मना है
चैनो सुक़ून के बिना बदहाली की ज़िन्दगी
ख़ौफ़ज़दा ज़िंदगानी से बेहतर तो मरना है

क्या खोज रहे हैं

मौत को मात दे सके उसे खोज रहे हैं
सबको आईना दिखा कर खोज रहे हैं
दिलों में धड़कन औ ज़ेहन में ख़यालात
ज़िन्दा मुर्दो में जोशो-जुनूँ खोज रहे हैं

---

1. ज़ियारत=तीर्थयात्रा **2.** तिजारत=व्यापार **3.** मुक़द्दस=पवित्र **4.** क़ौम=जाति

अपने अपने बहाने

बेबस मज़दूर पसीने में प्यास खोज रहे हैं
अपने हक़ व ईमान की रोटी खोज रहे हैं
आबाद है बस्ती में रन्ज़ो-ग़म और मातम
महलों में तो जश्न के बहाने खोज रहे हैं

दौलत में मगरूर

तड़पती रूह में चैन और सुक़ूँ खोज़ रहे हैं
ज़िंदा दफ़्न होने के लिए क़ब्र खोज रहे हैं
दौलत के गुरूर में फ़क़त हम ही तो ख़ुदा
परेशान होने पर ही ख़ुदा को खोज रहे हैं

बेख़ौफ ज़िन्दगी

ज़िन्दगी जो ज़िंदा दिली से जीते हैं
रंज़ व ग़म को भी हँसकर सहते हैं
ख़तरों के खिलाड़ी कभी मरते नहीं
मर कर भी दिलों में ज़िंदा रहते हैं

लफ़्ज़ों से मौत

ख़ंजर के जख़्मों को जो हँस कर सह लेते हैं
ज़ुबाँ के तीरों से वह जाँबाज दम तोड़ देते हैं
रिश्ते में ख़ुदग़र्ज़ी ज़हर से तो कम नहीं होती
ख़ुदग़र्ज़ी से ही तो ख़ास अपने बेमौत मरते हैं

वक़्त की पहचान

आँधियों में जो शजर का मचान लेते हैं
तूफ़ाँ के हालातों से वो नुक़सान लेते हैं
मुसीबतों के तूफ़ाँ में वो ही ज़िन्दा रहते
लताओं की तरह जो वक़्त जान लेते हैं

रिश्तों के अहसास

बन्जर ज़मीनों में बीज जिस तरह बेकार होते हैं
ख़ुदग़र्ज़ी की ज़िन्दगी में रिश्ते ऐसे बेज़ान होते हैं
अम्न व चैन की फ़सलें आबाद रहती है रिश्ते में
रिश्ते में जब अपनेपन व हमदर्दी के बीज होते हैं

असर देखना

दुआओं में क्या ख़ूब असर देखना
ग़रीब को खाना खिलाकर देखना
बिगड़े हुये काम कैसे बन जाते हैं
बेसहारों की ख़िदमात कर देखना

भरोसा

ज़ुबान पे सर कटवा कर देखना
ऐतबार व ईमाँ का असर देखना
कैसे झुकता है अदब से पैरों पर
इल्म और हुनर बाँट कर देखना

ज़ुबान के जख़्म

बिना तीरो तलवार मर कर देखना
बेवज़ह बदज़ुबानी सुन कर देखना
ज़ुबान के जख़्म कभी भरते नहीं हैं
दिल दिमाग़ में बहते नासूर देखना

---

1. ख़िदमात=सेवा **2.** इल्म=ज्ञान

अपनों की पहचान

अपनों पे जान निसार कर देखना
अपनों से एहतराम पा कर देखना
ऐतबार से कोई कैसे मरेगा 'साथी'
अपने वक़्त पर परख कर देखना

औरत का दामन

जहाँ भी चैन और सुक़ून पायेगा
रिश्ते में औरत का दामन पायेगा
कायनात में ख़ूबसूरती के आलम
हाथों में हाथ जब हसीन पायेगा

औरत की क़ैफ़ियत

ज़रूरत व मुसीबत में ख़्वातीन पायेगा
वक़्ते मददगार भाभी औ बहन पायेगा
उसकी दर्द व ग़म सहने की फितरत
दरिया और समन्दर सा ज़हन पायेगा

---

1. ऐतबार=विश्वास **2.** एहतराम=सम्मान **3.** जां निसार=जान देना **4.** क़ैफ़ियत=प्रवृति **5.** ख़्वातीन=औरत

ख़ूबसूरत मुलाक़ात

औरत के संग में मधुर मुस्कान पायेगा
महफ़िले रौनक़ में हसीं जहान पायेगा
मर्द तो मशरूफ़ है बेमतलब गुफ़्तगू में
चाय औ पानी तो कैसे मेहमान पायेगा

औरत का आँचल

क़ुदरत का क़रिश्मा ख़्वातीन का दामन है
फलता और फूलता घर-परिवार सावन है
सब के लिये ज़रूरतों के जज़्बात दिल में
ममता के अहसासों से हर रिश्ता पावन है

ख़ूबसूरत ईमान

सैनिक के लिए सरहद ख़ूबसूरत है
शहीदों के लिए फाँसी ख़ूबसूरत है
सच्चे वतन परस्त इन्सानों के लिये
वतन का अम्न औ चैन ख़ूबसूरत है

---

1. मशरूफ़=व्यस्त **2.** गुफ़्तगू=बातचीत 3. ख़्वातीन=औरत

ख़ूबसूरत भूख-प्यास

किसान के लिये हर दाना हीरे जैसा ख़ूबसूरत है
भूखे भिखारी के लिये सूखी रोटी भी ख़ूबसूरत है
आग की तरह तपते सहरा और पथरीले जंगल में
प्यासे के लिए पानी की चन्द बूँदें भी ख़ूबसूरत है

ख़ूबसूरत दुआयें

इन्सानों की क़ोशिशें हमेशा ख़ूबसूरत है
बेबसों के लिये दिली दुआयें ख़ूबसूरत है
ग़र्दीश औ मुसीबत के बुरे वक़्त में 'साथी'
मदद और हमदर्दी की ज़ुबाँ ख़ूबसूरत है

रिवाज़ के दुश्मन

हमबदन, हम बिस्तर इंसान बन रहे हैं
क़ुदरती इन्साफ़ के शैतान बन रहे हैं
तरक्क़ी पसंद परवरिश व तहज़ीब से
इंसान बदगुमाँ व बदज़ुबान बन रहे हैं

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** बदगुमान=घमण्डी

ख़ुदग़र्ज़ ज़िन्दगी

अहसास दफ़्न कर के हैवान बन रहे हैं
दिली परेशानियों का सामान बन रहे हैं
प्यार और मुहब्बत को दफ़्ना कर 'साथी'
तन्हा ज़िन्दगी का कब्रिस्तान बन रहे हैं

झूठी शान

घर के नौकर ही मेजबान बन रहे हैं
जो मेजबान हैं वो मेहमान बन रहे हैं
शानो-शौहरत औ रस्मों के बहाने से
घर होटल के जैसे मकान बन रहे हैं

इन्सान एक सामान

पूरब के इन्सान पश्चिम की दुकान बन रहे हैं
सस्ता व सुंदर और मज़बूत सामान बन रहे हैं
बेहिसाब नाज़ायज़ तमन्नायें व बेशुमार ज़रूरतें
ज़मीर औ ईमान को बेचकर बेईमान बन रहे हैं

रजवाड़ी मातम

रूदालियों के रूंदन औ क्रंदन शान बन रहे हैं
मौत के मातम और ग़मों के निशान बन रहे हैं
रूदालियों की पेशेवर आँखों से बहते हुये अश्क़
रजवाड़ी शान औ शौक़त के अरमान बन रहे हैं

वतन हम से है

सरफ़रोशी की तमन्नायें धरम से है
वतन में ख़ुशहाली हमारे करम से है
ज़िन्दगी और मौत की परवाह किसे
सरहद महफूज़ हमारे दम ख़म से है

जंग के उसूल

सैनिक किसी भी वतन औ धरम से है
उसके जख़्मों का इलाज मरहम से है
निहत्थे पर वार करना तो कायरता है
बहादुरी तो बेबस पे रहमो करम से है

---

1. रूदालियों=मौत के मातम पर पेशेवर रोने वाली

शहादत की शोहरत

शहीदों का लेखा व जोखा जख़्म से है
अमर-शहादत की शोहरत कलम से है
मौत को भी गले लगाकर चूमना 'साथी'
शहीदों का यह गहना जन्म जन्म से है

अंग्रेजी हुकूमत

चालाकी से झुककर सर काटे हैं
सौदागर ने वतन के पैर काटे हैं
तिजारत के बहाने गहरे तक पैठ
अपनों से अपनों के यार काटे हैं

ख़ुदग़र्ज़ अंग्रेज

लालच व ओहदे बाँट कर काटे हैं
आपस में ग़रीब औ अमीर काटे हैं
मुल्क़ सोने की चिड़िया का बसेरा
बिछा कर माया जाल पर काटे हैं

---

1. पर=पंख

सितमग़र अंग्रेज

काले पानी की बेरहम सज़ा के मेहमान हैं
इंक़लाब ज़िंदाबाद ही शहीदों के ईमान हैं
जलियाँ वाले बाग में बेबस बूढ़े और बच्चे
सरेआम बंदूकों से भूनकर अग्रेज हैवान हैं

मक्कार अंग्रेज

दीनो ईमान और मज़हब से अंग्रेज बेईमान हैं
सर और राय बहादुर के ख़िताब से शैतान हैं
हैवानियत की तरह शहीदों पर ज़ुल्मो-सितम
नाज़ायज़ क़ानूनों से शहीदों की रूह हैरान है

हुनर का क़त्ल

तीरन्दाज के अँगूठे का बलिदान
गुरु-शिष्य के रिश्ते का अपमान
ऐसी ख़ुदग़र्ज़ी में रिश्ता शर्मसार
जब भी गुरू हो जाते हैं बेईमान

परवरिश

फरिश्ते भी नहीं आते उस जहान
जहाँ औरतों का नहीं हो सम्मान
आशियाना तो एक दिन उजड़ेगा
बागवान न हो गुलों पर मेहरबान

शहादत के जज़्बात

अंग्रेजी हुकुमत हैरान व परेशान
जागा जब झाँसी का स्वाभिभान
शहीदों की बेहिसाब शहादतों से
बचा रहा हिन्दुस्ताँ का अभिभान

ज़ालिम महँगाई

ग़रीबी से जर्जर व ख़स्ताहाल मकान
महगाँई से हैरान व परेशान है इंसान
अपनी तो गुज़र-बसर बहुत मुश्क़िल
आ जाता है ज़ालिम बन कर मेहमान

ऐसा कैसा संविधान

अवाम के दिलों में नहीं वतन का मान
तिरंगें का जहाँ रोज होता हो अपमान
ख़ुदा मालिक ऐसे बदनसीब वतन का
गाना ज़रूरी नहीं है जहाँ पे राष्ट्रगान

बेरहम ताजो तख़्त

बादशाहों के ऐसे दीन औ ईमान
ज़माना समझता है उनको हैवान
अवाम अम्न और चैन से महरूम
शहँशाह देते हो मौत के फरमान

दौलत का नशा

बदज़ुबान और बदगुमान नज़र आते हैं
दौलत के नशे में इंसान नज़र आते हैं
बदल जाती है रंगत और फितरत भी
जब दोस्त फिर धनवान नज़र आते हैं

---

1. अवाम=जनता **2.** महरूम=वंचित **3.** बदगुमान=घमण्डी

बेगाने मेजबान

आँगन सूने-सूने से विरान नज़र आते हैं
ज़िन्दा इंसानों के श्मशान नज़र आते हैं
मशरूफ़ रहते हैं अपने कमरे में इस तरह
रहने वाले ही फिर मेहमान नज़र आते हैं

अपने ही दुश्मन

अपने ही ज़ालिम औ शैतान नज़र आते हैं
उजड़े हुये अपने ही अरमान नज़र आते हैं
अपनों से ही लुटवा चुकी हो अपनी अस्मत
अपनों में उसको सभी हैवान नज़र आते हैं

मुहब्बत के दुश्मन

जुदाई के लम्हें मौत के सामान नज़र आते हैं
नज़रे ज़माना, शिकार के मचान नज़र आते हैं
दो दिलों को मुलाक़ात करने से जो भी रोके
दीवानों को वो हैवान व शैतान नज़र आते हैं

---

1. मशरूफ़=व्यस्त

इन्सान की परख

वक़्त पर ही इन्सान में इन्सान नज़र आते हैं
तब ही इन्सान के दीनो ईमान नज़र आते हैं
जो जैसा है वैसा ही सोचेगा व करेगा 'साथी'
चोर को हर वक़्त सभी बेईमान नज़र आते हैं

बेवफ़ा ज़िन्दगी

दिल की लगी को बुझाने कोई भी नहीं आये
मज़ार पर चिराग़ जलाने कोई भी नहीं आये
घर जलाकर रोशन किया सारी कायनात को
अपनेपन से हमदर्दी जताने कोई भी नहीं आये

सत्यमेव जयते

बेबुनियाद इल्ज़ाम वक़्त पर काम नहीं आये
झूठे और मक़्कार सच के सामने नहीं आये
बहुत सोच समझकर लगाये गये थे इल्ज़ाम
सुबूत और गवाह मगर कभी हाथ नहीं आये

यादगार हसीन मुहब्बत

चैन और सुक़ून से जीने को कोई नहीं आये
ऐसी दिली मुहब्बत करने कोई भी नहीं आये
मुहब्बत ज़िंदा रहती है,कभी मर नहीं सकती
दफ़न के लिए दो बदन एक साथ नहीं आये

सुक़ून से बेवफ़ाई

ख़ूबसूरती औ ख़ुश्बू के दीवाने कोई नहीं आये
गुलशन की रखवाली के लिए कोई नहीं आये
नग़्मों और तरानों से चैन और सुक़ून सब को
सुख़न से दिली मुहब्बत करने कोई नहीं आये

ख़ुदग़र्ज़ इन्सान

इन्सानियत और शराफ़त में कोई भी नहीं आये
वक़्ते ज़रूरत हमदर्द बनकर कोई भी नहीं आये
सब के सब रिश्तों के ही सौदागर निकले 'साथी'
दिल से जज़्बात के क़द्रदान कोई भी नहीं आये

---

1. सुख़न = कविता

दास्ताने सुख़नवर

दिल औ दिमाग़ से जब रो कर देखना
ग़ज़ल और सुख़न में फिर असर देखना
बिना सुख़न के सुख़नवर की ज़िंदगानी
मछली को पानी से निकाल कर देखना

नाईन्साफ़ी

बेगुनाह होकर,गुनाहगार बन कर देखना
अपनी बेगुनाही के सुबूत मिटाकर देखना
तमाम सुबूतों और गवाहों के बावजूद भी
महफ़िल में फिर ख़ामोश रह कर देखना

बेबस बेवफ़ा

घर और परिवार को बाँट कर देखना
महकते गुलशन को उजाड़कर देखना
लगाया था जो शजर ख़ुशियों के लिए
बेरहमी से मज़बूरी में काट कर देखना

---

1. सुख़न=कविता **2.** सुख़नवर=कवि

समझदार प्यार

जो अपने दिल का ही वफ़ादार है
सुखी ज़िन्दगी का उसे अधिकार है
दिल से जब तक बग़ावत नहीं करे
इश्क़ में फिर कहाँ से ईमानदार है

रिश्तों का बन्धन

रिश्ता अपना हक़ माँगता है
सम्बंध के बंधन में बाँधता है
खानदान की पहचान देता है
मान सम्मान लेता औ देता है

रिश्तों का बन्धन

ज़ज़्बातों का सहारा लेता है
परिवार की निशानी देता है
रस्मो रिवाज़ में जकड़ता है
उपेक्षाओं से बेहाल होता है

रिश्तों का बन्धन

फ़र्ज़ का अहसास कराता है
ख़्वाबों से समझौता करता है
ख़ुदगर्ज़ियों से तबाह होता है
अहसास से फलता फूलता है

रिश्तों का बन्धन

ख़ुद को मोह औ माया में फँसाता है
प्यार औ मुहब्बत से आबाद होता है
नफ़रत औ रंजिश से तबाह होता है
जज़्बातों के क़द्र से परवान होता है

रिश्तों का बन्धन

ज़रुरतों से मज़बूत होता है
सम्बन्धों से अर्थ बदलता है
धन दौलत से पहचानता है
ज़ज़्बात को दफ़न करता है

अलविदा मधुर प्यार

अपने ख़ुशहाल जीवन की तबाही के लिये
अपने अहसास को तमाशा बनाने के लिये
पूनम की रातों को अमावस करने के लिये
आबाद आशियाने को तबाह करने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

महकते ग़ुलशन को उजाड़ने के लिये
रोशन शाम को मायूस करने के लिये
सुनहरे दिनों को बेचैन करने के लिये
रातों में बेचैन करवटें बदलने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

अपने जीवन को नर्क से बदतर करने के लिये
अपने दिलो दिमाग़ को बदहाल करने के लिये
अपने घर व परिवार से बेवफ़ाई करने के लिये
रोजगार और व्यापार को तबाह करने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

उसका गुनाहगार साबित होने के लिये
उसके बेईमाँ व बदनीयत होने के लिये
ज़माने के सामने बेआबरू होने के लिये
अपनों के सामने शर्मिन्दा होने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

उसके चालाक-शातिर होने के लिये
उसके बार-बार बेवफ़ा होने के लिये
उसके बेहया औ बेशर्म होने के लिये
उसका हमेशा ख़ुदग़र्ज़ होने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

मुहब्बत को बेमौत मरने के लिये
जज़्बात को दफ़्न करने के लिये
ख़ुशियों को ख़त्म करने के लिये
तन्हाईयों में आँसू बहाने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

उसकी नादानियों से बर्बाद होने के लिये
जुदाई के दर्द व ग़म में तड़पने के लिये
उसकी गलती की सज़ा भुगतने के लिये
ज़िन्दगी को बेहद ग़मगीन करने के लिये

मुहब्बत में ज़लालत

अपनी इंसानियत औ मानवता के सामने
अपने पवित्र और निर्मल प्यार के सामने
अपनों के विश्वास औ मुहब्बत के सामने
अपने अभिमान और स्वाभिमान के सामने

मुहब्बत में गुनहगार

अपने परमपिता परमेश्वर के सामने
अपनी वफ़ा औ शराफ़त के सामने
अपने सच और हक़ीकत के सामने
अपनी इबादत औ ईमान के सामने

अलविदा मधुर प्यार

अपने प्रेम गीतों की हत्या करने के लिये
सुहावनी सुबह को उदास करने के लिये
अपने तन-मन को जख़्मी करने के लिये
शर्म से पानी पानी हो कर जीने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

ज़िन्दगानी को ग़मगीन करने के लिये
जुदाई के दर्दो ग़म में जलने के लिये
आशियाने को शमशान बनाने के लिये
मेरे जज़्बातों को दफ़न करने के लिये

अलविदा मधुर प्यार

महकते ग़ुलशन को उजाड़ने के लिये
रोशन शाम को मायूस करने के लिये
सुनहरे दिनों को बेचैन करने के लिये
रातों में बेचैन करवटें बदलने के लिये

तुम कहाँ चले गये हो

यह संसार लगता अब श्मशान है
मेरा महकता आशियाना विरान है
तुम्हारे बिना ज़िन्दा तन बेजान है
ख़ुशियों का चमन भी सुनसान है

तुम कहाँ चले गये हो

दामन में हर तरफ मौत का सामान है
दिन व रात मिलन के बिना हैरान है
सुबह औ शाम मायूसी से परेशान है
दफ़न होते मेरे ख़्वाबों के अरमान है

तुम कहाँ चले गये हो

दर्द और ग़म के गीतों से लिखा दीवान है
आपके बिना ख़ुदक़ुशी का पूरा इत्मिनान है
बदहाल ज़िन्दगी चन्द दिनों की मेहमान है
तन्हाई औ जुदाई से आबाद मेरा जहान है

समझदार प्यार

बेवफ़ाई का क़त्ल करने के लिये
गिले शिक़वे ख़त्म करने के लिये
शख़्सियत की क़द्र करने के लिये
मान सम्मान को बढ़ाने के लिये

समझदार प्यार

शक़ और शिकायतों से बचने के लिये
तौहीन और ज़लालत से बचने के लिये
ख़ुदग़र्ज़ी औ बेवफ़ाई से बचने के लिये
वक़्त की नज़ाकत को समझने के लिये

समझदार प्यार

इज्ज़त औ आबरू महफूज़ रखने के लिये
इन्सानियत और हमदर्दी से जीने के लिये
अपनी अहमियत को बनाये रखने के लिये
परिवार औ ख़ुद को बचाये रखने के लिये

विरह की वेदना

मेरे ख़यालों में नहीं रहता कोई और है
मेरी अधजगी आँखों में रतजगी भौर है
दिल और दिमाग़ में हमेशा चितचोर है
तन औ मन में मिलन के नाचते मोर है

विरह की वेदना

तन्हाईयों में तुम्हारी यादों का शौर है
लगातार बहते हुये अश्क़ों का दौर है
विचलित मन पर चलता नहीं जोर है
बिन माँझी कश्ती का न कोई छोर है

विरह की वेदना

आँगन में जवान मौत सा मातम है
तुम्हारे बिना अब जीना भी हराम है
ख़ुशहाल सफ़र का तो पूर्णविराम है
आँसुओं की बरसात अब बेलगाम है

रिश्तों का बन्धन

अपनों से ज़लालत में बेग़ाना होता है
प्यार और मुहब्बत से आशना होता है
चाहत औ क़शिश से दीवाना होता है
मुसीबत के वक़्त में दोस्ताना होता है

मुहब्बत का सरमाया

मेरी बेबसी पर उसे दिल को दुखाना आता है
बिना प्यार के मुझे भी जुदाई में रोना आता है
ख़ुदा अब कुछ तो रहम करदे मेरी बेक़रारी पर
बेबस और लाचार हो कर अब दीवाना आता है

मुहब्बत का सरमाया

मुझे इस तरह से ज़िन्दगी को जीना आता है
तन्हाईयों में अश्क़ बहाकर मुझे पीना आता है
जलकर ख़ाक़ होना है यह भी मालूम उसको
शमा पे जलने के लिये बेताब परवाना आता है

प्यार का सिला

जिसको मैंने तन और मन से जीना सिखाया
उसका कहना है कि वह मेरे कब काम आया
जिसके लिये मैंने अपनों से भी बग़ावत करली
उसने ही मुझ पर बेवफ़ाई का इल्ज़ाम लगाया

प्यार का सिला

अपने तन मन पर मैंने उसका नाम लिखवाया
उसने गैरों में सबसे पहले मेरा नाम गिनवाया
जिसके लिये मैं रूसवा हो गया सारे ज़माने में
उसने ही मुझको अपने आप से बेग़ाना बताया

प्यार का सिला

जिसे मैंने अपने ख़्वाबों औ ख़यालों में बसाया
उसने ही मुझे दिल व दिमाग़ से बहुत सताया
मालूम था बदहाली में एक दिन ख़त्म होना है
परवाने की तरह जलकर ख़ुद को ही मिटाया

चाहत की दास्ताँ

जर्जर-जर्जर औ तार तार होकर प्यार में गला है
प्रेम की कपास को चाहत और क़शिश में मला है
ज़िन्दा रहना है इश्क़ के अहसास में कयामत तक
प्यार के लिये रोज मर-मर कर जीने का सिला है

चाहत की दास्ताँ

बेबस और बेक़रार हो कर जब जब प्यार जला है
दिल दिमाग़ में बेइन्तहा मुहब्बत का ग़ुल खिला है
सख़्त पत्थरों को शीशे से तोड़ना आसान है 'साथी'
मुहब्बत की फ़ितरत औ तासीर में ऐसी ही बला है

ख़ामोश मुहब्बत

बेक़रार होकर भी इज़हार नहीं करना अना है
चुपके चुपके अश्क़ बहाकर ही मुहब्बत फ़ना है
दिल बहुत कहना चाहे मगर कुछ कह न सके
ख़ामोश निग़ाहें फिर तो बोलते हुये दो नैना हैं

ख़ामोश मुहब्बत

माना कि बेबस दिल में अन्धेरा बहुत घना है
मगर उम्मीदों का चराग़ जलाना कब मना है
हज़ारों मीलों की दूरी भी बेमानी हो जाती है
ग़र प्रेम कहानी में समझदार तोता व मैना है

ऐसे भी क्या जीना

बिना मुहब्बत के जिसका दिलो दिमाग़ है
कोरे काग़ज की जिल्द की हुई क़िताब है
शरीके हयात में मुहब्बत के अहसास नहीं
फिर जन्नत भी दोजख़ जैसे ही अज़ाब है

ऐसे भी क्या जीना

आकाश में चमकते हुये सितारे बेहिसाब है
यादों के जुगनुओं का इस तरह हिसाब है
रस्म औ रिवाज़ की मज़बूरियाँ ऐसी है कि
समन्दर औ दरिया भी तश्नगी से बेताब है

ऐसे भी क्या जीना

रूह होने पर भी ये ज़िंदा शरीर बेज़ान है
जल कर ख़ाक़ बिना रोशनी का चराग़ है
सुहानी चाँदनी रातों में भी हसीन माहताब
वफ़ा व ऐतबार की रोशनी बिना बेसाख है

यही तो प्यार है

दिल को अज़ीज़ अपने महबूब की सारी ख़ता है
अगर बेपनाह मुहब्बत में महबूब दिल से ख़ुदा है
जो दिल को चुराता है वह तो चोर नहीं होता है
ये तो तन और मन को बेक़रार करने की अदा है

यही तो प्यार है

महबूब अगर ख़्वाब में भी थोड़ा सा भी ख़फ़ा है
बिना महबूब ये ज़िन्दगी काले पानी की सज़ा है
आँखों से बेशुमार अश्क़ बहकर समन्दर हो गया
बेइंतहा इंतज़ार मिलन का जो आँखों में जमा है

यही तो प्यार है

हैरानी की बात है कि ये प्यार अब तक ज़िंदा है
बेइन्तहा इश्क़ में प्यार के लिये दिल की वफ़ा है
ज़हर से ही ज़हर का इलाज मुमक़िन है 'साथी'
हद से गुज़रकर ही तो दर्दे मुहब्बत फिर दवा है

महबूब के बिना

बेपनाह मुहब्बत एक सुख़नवर को बर्बाद कर देगी
मगर आबाद महफ़िल में शायर को दाद कर देगी
मुहब्बत है कोई हँसी मजाक का सामाँ नहीं 'साथी'
इससे दिल्लगी आबाद ज़िन्दगी को राख कर देगी

महबूब के बिना

तन की अगन प्यार को जला कर ख़ाक़ कर देगी
मन की तपन मुहब्बत को तपा कर पाक़ कर देगी
महबूब से बेपनाह मुहब्बत, चाहत और क़शिश है तो
एक पल की जुदाई अश्क़ों से सागर आँख कर देगी

मुहब्बत का क़रिशमा

चाहत औ क़शिश महबूब को बदहाल कर देगी
बेवफ़ाई व ज़फ़ायें मुहब्बत को मलाल कर देगी
तमाम उम्र तक यादों में बेशुमार अश्क़ बहा कर
बेताबी से आँखों में अश्क़ों का अकाल कर देगी

मुहब्बत का क़रिशमा

ये तौहीन और बेरूख़ी दिल में सवाल कर देगी
शक़ औ शिकायतें मुहब्बत को हलाल कर देगी
महबूब के लिये सिर्फ़ ज़रूरतों का ही फ़लसफ़ा
दिले महबूब में फिर शख़्सियत कमाल कर देगी

इस तरह से क्या है

हमेशा अपने महबूब का ही अक़्स दिखना क्या है
बेख़बर हो कर महबूब का यादों में बसना क्या है
न तो वक़्त का अहसास रहता और नहीं ख़ुद का
बेख़ुदी के आलम में इस तरह ज़िंदा रहना क्या है

इस तरह से क्या है

विरह की वेदना में तन व मन का जलना क्या है
बर्फ़ की तरह से अपने ही तन का गलना क्या है
बेइंतहा उल्फ़त है मगर महबूब पास में नहीं रहता
बेज़ान ज़िंदा रह कर इस तरह रोज़ मरना क्या है

इस तरह से क्या है

अमावस जैसी अन्धेरी रातों में तारे गिनना क्या है
इस तरह से बेबस हो कर इन्तज़ार करना क्या है
मिलने को बेताब है मगर वक़्ते मुलाक़ात ख़ामोशी
बेक़रार होकर इस तरह महबूब से मिलना क्या है

दास्ताने वफ़ा

चाहत, क़शिश और वफ़ाओं से जो बेहाल है
विरह की व्याकुल वेदना में वो ही हलाल है
दो जान है तो, फिर दो बदन होगें ही 'साथी'
दो बदन का एक जाँ होना ही तो मिसाल है

दास्ताने वफ़ा

दिल व दिमाग़ ख़ुशियों से बेहद ख़ुशहाल है
चाहे प्यार का ये रिश्ता महज़ एक ख़याल है
ज़िन्दगी में रस्मो रिवाज़ के पक्के रंग न सही
ख़ूबसूरत अहसास के लिये सतरंगी गुलाल है

दास्ताने वफ़ा

हक़ीकत जब जब बेहद बेबस और बदहाल है
हसीन कल्पनाओं के लिये फिर क्यों मलाल है
यादों की बारात औ सपनों की डोली है साथ
फिर जीवन साथी के दिली अरमाँ बेमिसाल है

मुहब्बत का असर

महबूब का एक पल के लिये नाराज़ रहना
कितना आसाँ हो जाता है ख़ुदकुशी करना
मुहब्बत में इस तरह बेबस व लाचार है कि
बेरूख़ी व तौहीन से भी दिल में प्रेम जगना

मुहब्बत का असर

बेबस औ बेक़रार होकर भी कुछ न कहना
तड़पती रूह को बेज़ाँ दिल में दफ़्न रखना
मेरे ज़नाजे में वह बेवफ़ा भी शामिल होगा
कितना लाज़वाब रहेगा इस तरह से मरना

ऐसा हमारा प्यार है

मेरी जीत उस की माँग में सिंदूर का शृंगार है
मेरी हार उसके गले में वरमाला का ही हार है
जीत कर भी हारना औ हारकर भी जीत जाना
ऐसे अहसास, ज़ज़्बात से मंगलसूत्र का क़रार है

ऐसा हमारा प्यार है

एक दूजे को देखें बिना हम दोनों ही बेक़रार हैं
हमेशा तन व मन में करवा चौथ का त्यौहार है
हर हाल में हमारा तुम्हारा साथ ऐसा होगा कि
जैसे जहान का चाँद व सूरज के साथ क़रार है

मुहब्बत का फ़लसफ़ा

मुहब्बत का दीन और ईमान हो जाना
महबूब का चाहत में भगवान हो जाना
मन्दिर सा महबूब का मकान हो जाना
महबूब की आवाज़ में अज़ान हो जाना

नादान मुहब्बत

अपने हक़ के लिये आपस में झगड़ना
मुलाक़ात के लिये बेबस होकर तरसना
छोटी सी बातों पर बच्चों जैसे मचलना
एक दूजे की नादाँ ग़लतियों पे बिगड़ना

चाहत की दीवानगी

मज़बूर हो कर नाज़ायज को ज़ायज बताना
चाहत में बेक़रार होकर हमारा अश्क़ बहाना
हर तरह की बला से अपने प्यार को बचाना
मुलाक़ात के लिये हर दिन नये बहाने बनाना

बेक़रार मुहब्बत

अज़नबी आवाज़ का आशना हो जाना
चाहत में तन मन से दीवाना हो जाना
दिल और दिमाग़ का बेग़ाना हो जाना
एक दूजे का ख़याल ज़माना हो जाना

बेबस मुहब्बत

हमारा क़शिश व प्यार में बेक़रार हो जाना
बेबस और मज़बूर होकर इज़हार हो जाना
तमामउम्र साथ निभाने का क़रार हो जाना
तन व मन का आपस में एकसार हो जाना

बेचैन मुहब्बत

प्यार के लिये रस्मो रिवाज़ का बेकार हो जाना
मुलाक़ातों के लिये दिन रात इन्तज़ार हो जाना
साथ जीने और मरने के लिये इक़रार हो जाना
एक दूसरे को देखे बिना हमारा बेज़ार हो जाना

हमदर्द मुहब्बत

चाहत औ क़शिश में हम दोनों का लाचार हो जाना
एक दूसरे के दिल और दिमाग़ पर ऐतबार हो जाना
गिले व शिक़वे दूर करके हमारा समझदार हो जाना
एक दूसरे की परेशानियों के लिये वफ़ादार हो जाना

समझदार मुहब्बत

एक दूसरे की ज़रुरतों के लिये ईमानदार हो जाना
एक दूसरे की ख़ुशियों के लिये तीमारदार हो जाना
एक दूसरे के दर्दो ग़म के लिये ग़मगुसार हो जाना
एक दूसरे की हमदर्दी के लिये ख़ुशगवार हो जाना

मुहब्बत के गिले शिक़वे

विरह की व्याकुल वेदनाओं में हम दोनों का तड़पना
दो बदन का एक जान होने के लिये हमेशा मचलना
प्यार पाने औ देने के लिये हमारा आपस में झगड़ना
एक दूजे के दिली ज़ज्बात के लिये ख़ुद को बदलना

ग़मगीन मुहब्बत

जुदाई में अश्क़ बहा कर बेहाल हो जाना
एक दूसरे की यादों में बदहाल हो जाना
एक दूजे की ख़ताओं से मलाल हो जाना
एक दूजे के दीदार से ख़ुशहाल हो जाना

मुहब्बत के जोशो जुनून

प्यार के लिये अपने घर-परिवार से भी बग़ावत करना
एक दूजे की ख़्वाहिश के लिये ख़ुद से अदावत करना
एक दूजे की ख़ुशियों के लिये ख़ुदा से इबादत करना
रूसवाईयों से एक दूसरे को हर वक़्त सलामत करना

मुहब्बत के दीनो ईमान

तन और मन से एक दूसरे की अमानत हो जाना
एक दूजे की गलतियों के लिये जमानत हो जाना
ज़रुरतों के वक़्त एक दूसरे पर इनायत हो जाना
एक दूजे की ख़्वाहिश के लिये ज़ियारत हो जाना

मुहब्बत की निशानी

एक दूसरे का बेवज़ह हँसना और हँसाना
एक दूसरे को देख कर हमारा मुस्कुराना
नाराज़गी से आपस में रूठना औ मनाना
एक दूसरे से प्यार में चिड़ना व चिड़ाना

मुहब्बत की तासीर

अलसुबह महबूब के दीदार का ही आफ़ताब हो जाना
सुहावनी चाँदनी रातों में महबूब का माहताब हो जाना
यादों का झिलमिलाते तारों के जैसे बेहिसाब हो जाना
एक दूसरे की कायनात का मुक़म्मिल ज़वाब हो जाना

मुहब्बत की दास्तान

प्यार की क़शिश व चाहत से तन-मन में ख़ुमार हो जाना
ख़यालों से बेख़ुदी में दिल औ दिमाग़ का मज़ार हो जाना
एक दूसरे के बिना ख़ुशहाल जीवन में अन्धकार हो जाना
एक दूसरे के बिना धन दौलत के ख़ज़ाने बेक़ार हो जाना

मुहब्बत का चमत्कार

मुहब्बत के रिश्ते का दिल से घर व परिवार हो जाना
रस्म और रिवाज़ से करवा चौथ का त्यौहार हो जाना
पाक़ मुहब्बत का बन्धन मंगलसूत्र का क़रार हो जाना
दिलो दिमाग़ में ऐतबार से वरमाला का हार हो जाना

मुहब्बत की कैफ़ियत

हताशा व निराशा के वक़्त में प्यार का चराग़ हो जाना
रोम-रोम में अंकुरित होकर मुहब्बत का पराग हो जाना
मुहब्बत के रंग में रंग कर तन मन का बेदाग़ हो जाना
निर्मल व पवित्र होकर दिलो दिमाग़ का बेराग हो जाना

मुहब्बत की फ़ितरत

दर्द व ग़म के वक़्त एक दूसरे के लिये वफ़ा हो जाना
जुदाई व तन्हाई का एक दूजे के लिये ज़फ़ा हो जाना
बेरूख़ी और तौहीन से हमारा आपस में ख़फा हो जाना
रूठने व मनाने से गिले और शिक़वे का दफ़ा हो जाना

मुहब्बत का सुरूर

रूख़सार का खिलता हुआ गुलाब हो जाना
तन-मन का मचलता हुआ शबाब हो जाना
प्रेम का प्याला महकती हुई शराब हो जाना
चेहरे का चाँदनी रातों का ज़वाब हो जाना

यादगार मुहब्बत

ख़ूबसूरत लम्हों का हसीन सुहाग रातें हो जाना
तमाम उम्र के लिये यादगार मुलाक़ातें हो जाना
एक दूसरे की बाँहों में समाते हुये बातें हो जाना
विरह की बेचैन वेदना में अधजगी रातें हो जाना

बेइन्तहा मुहब्बत

जुदाई और तन्हाईयों का वक़्त बेहिसाब हो जाना
बेक़रारी में गीत और ग़ज़ल की किताब हो जाना
मुलाक़ात के लिये दूरियों का भी अज़ाब हो जाना
दर्द औ ग़म के वक़्त मुहब्बत का सवाब हो जाना

ख़ूबसूरत मुहब्बत

प्यार का बसन्त के मौसम जैसा मधुमास का सावन हो जाना
प्यार के सागर में नहा कर तन और मन का पावन हो जाना
प्यार के रंग में रंगकर दिल और दिमाग़ का फागुन हो जाना
ख़ूबसूरत अहसास और ख़यालों से ख़ुशगवार दामन हो जाना

नादान मुहब्बत

सिर्फ़ अपना ही बने रहने के लिये क़स्में दिलाना
बेबसी, बेचैनी औ बेक़रारी के हालात को समझाना
प्यार को पाने के लिये अपने आपको भी मिटाना
बेइन्तहा चाहत व क़शिश के सबूतों को दिखाना

मुहब्बत के अहसास

आहिस्ता आहिस्ता रिश्तों के मायने बदल जाना
रिश्तों के अहसास से वैसे ही जज़्बात को पाना
दिलों में हर वक़्त मुहब्बत के ख़यालों का आना
तन और मन से मुहब्बत को सम्पूर्ण संसार माना

मुहब्बत की ख़्वाहिशें

दोनों के जीवन में ख़ुशियाँ बेशुमार रहे
दिल औ दिमाग़ से कभी न बेज़ार रहे
एक दूजे के दिल में बेइन्तहा प्यार रहे
रोशन क़िस्मत को हमारा इन्तज़ार रहे

मुहब्बत के फ़लसफ़े

मुहब्बत के लिए हमारे दिल में ईमान रहे
अपना महबूब दिल दिमाग़ में भगवान रहे
हमारे प्यार का सारे ज़माने में सम्मान रहे
दोनों के दिल में उल्फ़त का इत्मीनान रहे

मुहब्बत के ज़ज़्बात

स्वस्थ और निरोगी हमारी कंचन काया रहे
तन मन पे एक दूजे के प्यार की छाया रहे
आशियाने में महकती ख़ुशियों का साया रहे
शान व शौक़त से ज़िन्दगी का सरमाया रहे

मुहब्बत के अहसास

हमारे दिलो दिमाग़ में हमेशा प्यार बरक़रार रहे
जन्मों-जन्मों तक हमें साथ रहने का क़रार रहे
हमें एक दूजे की बाँहों में समाने का इंतज़ार रहे
ख़ूबसूरत अहसास की तन औ मन में बहार रहे

मुहब्बत के तसव्वुर

ख़ुशहाल आशियाने में हम दोनों का प्यार एक साथ रहे
सुहावनी चाँदनी रातों में एक दूसरे की बाँहों में हाथ रहे
हर एक दिन सुहाग रात के हसीं ख़्वाबों के जज़्बात रहे
सुहाग की सेज पर सिंदूर व मंगलसूत्र के ख़यालात रहे

मुहब्बत के ऐतबार

एक-एक पल में हमें सदियों का अहसास रहे
एक दूसरे के दिल में हर हाल में विश्वास रहे
चाहत, क़शिश और मिलन की मन में आस रहे
एक दूजे को हर पल साथ रहने का आभास रहे

मुहब्बत की तमन्नायें

एक दूजे की मुहब्बत हमको अमानत रहे
एक दूसरे की ग़लतियों की ज़मानत रहे
एक दूजे के दिल में मुहब्बत इबादत रहे
हमारे पवित्र प्यार का सफ़र ज़ियारत रहे

मुहब्बत की भावनायें

प्यार को महफूज़ रखने को ज़माने से अदावत रहे
महबूब के लिए ख़ुद अपने आप से भी बग़ावत रहे
मुहब्बत के लिए दिलों में हमदर्दी और शराफ़त रहे
परेशानियों और ज़रूरत के वक़्त में इन्सानियत रहे

मुहब्बत के ख़्वाब

हमारा प्यार इस ज़माने के लिए मिसाल रहे
पाक़ मुहब्बत की दास्ताँ दिलों में कमाल रहे
तन औ मन पर प्यार की सतरंगी गुलाल रहे
वफ़ा व ऐतबार से रोशन प्यार का ज़माल रहे

मुहब्बत का चमत्कार

मुस्तक़बिल हमारी तमन्नाओं का आफ़ताब रहे
ज़माने में सम्मान हमारे प्यार का माहताब रहे
प्यार की ख़ुमारी व मस्ती में हमारा शबाब रहे
आशिकों में हमारी मुहब्बत क़ाबिले आदाब रहे

मुहब्बत की तासीर

निर्मल और पवित्र हमारे प्यार का सवाब रहे
अजर व अमर हमारी मुहब्बत का ज़वाब रहे
यादों से बेख़बर-बेख़ुदी में हम बेहिसाब रहे
इज़्जत और आबरू से प्यार का हिज़ाब रहे

मुहब्बत के इक़रार

परमपिता परमेश्वर पे हमें सम्पूर्ण ऐतबार रहे
आँगन में पूरी होती तमन्नाओं का संसार रहे
मनोकामनाओं में अजर अमर हमारा प्यार रहे
हमारी ख़्वाहिश व तमन्नाओं में दीदारेयार रहे

मुहब्बत की वजह से

ज़िंदा रह कर भी तो वो बेज़ान रहेगा
मेरी यादों में तड़पकर वो ऐसे जीयेगा
उसका क़ातिल साबित नहीं हो जाऊँ
इस लिये वह घुट-घुट कर ही मरेगा

मुहब्बत की वजह से

एक न एक दिन दीवाना ज़रूर जलेगा
परवाना फिर भी तो शमा पर मचलेगा
बेचैन हो कर सूरज से मिलने के लिये
चाँद इसी उम्मीद में सारी रात जगेगा

मुहब्बत की वजह से

रोम रोम में मेरा अहसास ऐसा सजेगा
तन मन में वैसे ही मुझे महसूस करेगा
हर वक़्त सात वचनों में 'साथी' का साथ
मेरा अक़्स उसकी यादों में ऐसा बसेगा

मुहब्बत की वजह से

मुहब्बत में इस तरह से दीवाना बनेगा
ख़ुदा से बढ़कर भी महबूब को मानेगा
बेसुध व बेख़ुदी का आलम ऐसा है कि
फ़िक्र क्यों है कि यह वक़्त कैसे कटेगा

तौहीने मुहब्बत

जब भी ज़ुबान पर शिक़वा और गिला आता है
दिल औ दिमाग़ पर तब बेवजह ज़फा आता है
मुहब्बत बिना वज़ह से ही दम तोड़ देगी 'साथी'
जब जब भी दिल और दिमाग़ में अना आता है

तौहीने मुहब्बत

ख़यालों में रिश्तों का नुकसान व नफ़ा आता है
प्यार मुहब्बत में यक़ीनन फिर तो दगा आता है
जिसको ख़ुशहाल जीवन के मायने सिखाये मैंने
उसका कहना है कि वह मेरे काम क्या आता है

तौहीने मुहब्बत

ख़ुदा इतना बेरहम व ज़ालिम क्यों हो जाता है
दो दिलों को जुदा करने में क्या मजा आता है
एक दूसरे के बिना जीना मुश्क़िल हो जाये तो
रस्मो रिवाज़ के बंधन पर फिर गुस्सा आता है

अन्ज़ामे मुहब्बत

मुझ पर मेरा क़त्ल करने का इल्ज़ाम है
यह बेइन्तहा इश्क़ करने का अन्ज़ाम है
इश्क़ में अपने आप से भी बेख़बर रहना
अपने आप ख़ुदकुशी के सारे इंतजाम है

अन्ज़ामे मुहब्बत

मेरी ज़िन्दगी का सिर्फ़ यही एक काम है
हर पल ज़ुबान पर महबूब का ही नाम है
मुहब्बत दिल की धड़कन हो जाये 'साथी'
फिर प्यार की ज़िन्दगी मौत का पैग़ाम है

अन्ज़ामे मुहब्बत

दो बदन पर जब एक जान की लगाम है
बेपनाह चाहत व क़शिश फिर बेलगाम है
ज़िन्दा औ बेजान बदन में कोई फ़र्क़ नहीं
विरह की व्याकुल वेदना का यह मुक़ाम है

सिर्फ़ तुम हो

मेरे प्राणों में जीवन का संचार तुम हो
मेरी रग-रग में लहू की धारा तुम हो
मेरे दिल के धड़कन के सबब तुम हो
मेरी साँसों का वजूद भी सिर्फ़ तुम हो

सिर्फ़ तुम हो

मेरी बेचैनियों का क़रार तुम हो
मेरी ख़ुशियों के इज़हार तुम हो
मेरी ख़्वाहिशों के अरमाँ तुम हो
मेरी इबादत की अजान तुम हो

सिर्फ़ तुम हो

मेरे जीवन के हर त्यौहार तुम हो
मेरे आँगन के घर परिवार तुम हो
मेरी हर उम्मीदों के चराग़ तुम हो
मेरी मंज़िल का हर सफ़र तुम हो

बेबस मुहब्बत

अपने तन और मन को अश्क़ों से इस लिये धोता है
अपने आपको निर्मल व पवित्र करने के लिये रोता है
अपनी मुहब्बत को ही अजर औ अमर करने के लिये
सोच समझकर अपने तन औ मन को सारा खोता है

चाहत के सबूत

वह मुझ को अपना ऐसा गुनाहगार मानता है
मुझ पर अपनी मुहब्बत का अधिकार मानता है
वो अपने प्यार का हक किसी और को देकर
इसलिये वो अपने आपको सज़ादार मानता है

चाहत के सबूत

मुहब्बत में अपने को ऐसा वफ़ादार मानता है
वो मेरे बिना अपने आपको बेक़रार मानता है
मेरे सारे के सारे संगीन गुनाह कुबूल कर के
अपने दिल दिमाग़ में मुझे गिरफ़्तार मानता है

चाहत के सबूत

अपने दिलो-दिमाग़ में ऐसा ऐतबार मानता है
दो बदन के एकजान होने को प्यार मानता है
मुहब्बत की चाहत ऐसी कि जान पे बन आये
वो फिर भी अपने आपको समझदार मानता है

हमसफर के जज़्बात

हज़ारों मीलों दूरी से मेरे अक़्स का दीदार मानता है
इस तरह से हक़ीकत में मुझको विसालेयार मानता है
तमाम उम्र के लिये सात वचनों के बन्धन में बन्धकर
हमेशा के लिये मुझको अपना घर-परिवार मानता है

हमसफर के जज़्बात

ख़ुद से बेख़बर हो कर अपने को ख़बरदार मानता है
मेरे पल पल के अहसास को ऐसे जानकार मानता है
ताहीर और पाक़ मुहब्बत के चन्द लम्हें पाने के लिये
अपना सब कुछ खोकर अपने को होशियार मानता है

हमसफर के जज़्बात

अपने आपको मेरे तन औ मन का ज़ागीरदार मानता है
इस लिये वह अपने आपको ही मेरा कर्ज़दार मानता है
मुहब्बत को बचाने लिए कुछ भी कर गुज़रने को तैयार
ज़ायज को ग़लत कह कर ख़ुद को थानेदार मानता है

मुहब्बत ही सब कुछ

बेचैनियों औ बेताबी में वह इतना लाचार है
ज़ान हथेली पर रखकर मिलने का क़रार है
बिन पानी के मछली तड़पती है जिस क़दर
विरह की वेदना में वह इतना ही बेक़रार है

मुहब्बत ही सब कुछ

दो बदन दफ़्न होने के लिये एक मज़ार है
उसके दिल में ऐसा अजर-अमर विचार है
ज़िन्दा न सही अर्थी को सुहागन कर देना
मरते दम तक उसको मेरा ऐसा इंतज़ार है

मुहब्बत ही सब कुछ

उसके मन में अक़ीदत और इबादत प्यार है
उसके दिल में मुहब्बत अब परवर दिगार है
मेरी ख़्वाहिशों, ख़ुशियों और जज़्बात के लिये
उसके दिल में 'साथी' सिर्फ ऐसा ही संसार है

अनमोल मुहब्बत

माना कि संगीन ज़ुर्म है झूठ बोलना
इससे भी बड़ा गुनाह है दिल तोड़ना
अपने प्रेम को महफूज़ रखने के लिये
नाज़ाईज को भी फिर ज़ाईज सोचना

अनमोल मुहब्बत

इज़हारे मुहब्बत को कभी नहीं रोकना
अपना राज़ महबूब के सामने खोलना
चाहत औ मुहब्बत बेशकीमती होती है
प्यार में ऐतबार को कभी नहीं तौलना

अनमोल मुहब्बत

दोबदन को फिर एक से जान जोड़ना
तन और मन को प्यार में ही घोलना
हर वक़्त महबूब अपने ही पास रहेगा
दिल व दिमाग़ में मिलन को खोजना

तन मन का चितचोर

वह मेरे दिल की चाहत, चैन औ सुक़ून का चोर है
ये उसकी बेइन्तहा मुहब्बत व क़शिश का जोर है
दिल और दिमाग़ में हर वक़्त सिर्फ़ उसकी यादें
मेरे दिल में नाचता उसकी दीवानगी का मोर है

तन मन का चितचोर

जुदाई में उसके अक़्स व ख़यालों का ऐसा दौर है
विरह की व्याकुल वेदना में ऐसी रातों की भोर है
बेचैनी में करवटें बदल-बदल कर गुज़रती है रातें
उसके प्यार का बंधन मेरी ख़ुशहाली की डोर है

महबूब के बगैर

उसकी दिलक़श हसीन अदाओं में इतना जोर है
मेरे तन और मन के सुक़ून का वह चित चोर है
उसके बिना कटी पतंग की तरह मेरी ज़िन्दगानी
उसके हाथों में मेरी ख़ुशहाल ज़िन्दगी की डोर है

महबूब के बगैर

मेरे ख़्वाबों और ख़यालों का यही आख़िरी छोर है
उस के जज़्बात मेरे जीवन में अब क़ाबिले गौर है
बेचैन और बेक़रार हो जाता है मेरा तन और मन
ये उसके हसीन व ख़ूबसूरत अहसास का शोर है

महबूब के बगैर

उस के बिना मेरी ज़िन्दगी में अन्धेरा घन घोर है
ख़यालों के सागर में अब बेख़ुदी का ऐसा दौर है
उसके बिना मेरा ज़िंदा रह पाना नामुमक़िन होगा
दो बदन एक जान के लिये मन में नाचता मोर है

ख़ुशहाल मुहब्बत

हमारी मुहब्बत का इतना असर औ विश्वास हो रहा है
तन औ मन में दुल्हा व दुल्हन का अहसास हो रहा है
ख़्वाबों औ ख़यालों में बेख़ुदी का आलम ऐसा रहता कि
कल्पनाओं में ही हमको हक़ीकत का आभास हो रहा है

ख़ुशहाल मुहब्बत

तार-तार होते जीवन में हमारा प्यार कपास हो रहा है
चाहत औ क़शिश में इन्सानियत का विकास हो रहा है
हमारा आशियाना ख़ुशहाली और रोशनी से आबाद रहे
मुहब्बत से हमारी ज़िन्दगी में सुनहरा प्रकाश हो रहा है

ख़ुशहाल मुहब्बत

हमारी मुहब्बत में घर औ परिवार का आवास हो रहा है
हैरान, परेशान और बेज़ान दिलों में प्यार ख़ास हो रहा है
हम दोनों को वादों व इरादों में ऐतबार ऐसे रहता है कि
ज़िन्दगी भर के लिये करवा चौथ का उपवास हो रहा है

आपके लिए

परवाने भी मचलते हैं शमा की ज़ीस्त के लिए
जज़्बात तो ज़िन्दा है आपकी मुहब्बत के लिए
ग़म अगरचे जान लेवा है यह मालूम है मुझको
मगर ये ग़म भी हैं तो आपकी उल्फ़त के लिए

ऐसा है मेरा प्यार

मुहब्बत ही अब मेरा दीन और ईमान है
दिल के मन्दिर में महबूब ही भगवान है
ख़्वाबों औ ख़यालों में दुनिया से बेख़बर
महबूब की पुकार ही मेरे लिए अज़ान है

ऐसा है मेरा प्यार

मुहब्बत ही अब मेरे लिए सारा जहान है
मेरे कदमों के नीचे मुक़्मिल आसमान है
ताहीर व पाक़ ईबादत औ दुआ के साथ
मेरा प्यार अक़ीदत में ख़ुदा से वरदान है

ऐसा है मेरा प्यार

मेरा प्रेम समाज में बहुमत का मतदान है
मेरी मुहब्बत दिल में कला औ विज्ञान है
मुहब्बत की अहमियत ऐसी है ज़िन्दगी में
'साथी' बिना धन दौलत के ही धनवान है

मुहब्बत का असर

सदा ज़ुबान से निकलेगी
फिर ज़माने तक पहुँचेगी
हक़ीक़त छुप नहीं सकती
दिलों की आवाज़ बोलेगी

मुहब्बत का असर

तन्हा तड़पेगी रोया करेगी
फिर रूह कुछ तो बोलेगी
इज़हार कर ही दो 'साथी'
मुहब्बत ऐसे ही क्यूँ मरेगी

क्या यह प्यार है

इश्क़ में तबाही मंजूर होगी मगर जलालत नहीं
गुस्ताखियाँ ही माफ होती है मगर बग़ावत नहीं
मुहब्बत में सब कुछ ज़ाईज होगा फिर भी 'साथी'
नादानियाँ ही मुआफ होती है मगर अदावत नहीं

क्या यह प्यार है

बेगुनाह को बिना वज़ह सज़ा, यह शराफ़त नहीं
क्या ऐसी मुहब्बत फिर दोजख़ व क़यामत नहीं
सबको अपने अपने ज़ुर्मो का हिसाब देना होगा
किसी का नाज़ाईज हक़ लेना इन्सानियत नहीं

क्या यह प्यार है

सिर्फ़ बातें ही बातें दिले महबूब में जमानत नहीं
मुहब्बत दिल से रज़ामन्दी है कोई हिदायत नहीं
अपना महबूब हर हालात में ख़ुदा से कम नहीं है
फिर भी किसी को बद्दुआ देना तो इबादत नहीं

यह तो मुहब्बत नहीं

ताहीर और पाक़ मुहब्बत के दिल मे ज़ज्बात नहीं
फिर तो जाँ निसारी से मुहब्बत भी अक़ीदत नहीं
सबको अपनी अपनी मुहब्बत की हिफ़ाज़त चाहिये
प्यार तो एक फ़र्ज़ है किसी के उपर इनायत नहीं

यह तो मुहब्बत नहीं

महबूब की ख़ुशियों व ज़रूरतों के ख़यालात नहीं
नगें पैर मक्का मदीना फिर हज व ज़ियारत नहीं
मेरा प्यार सिर्फ़ व सिर्फ़ मेरा अपना ही है 'साथी'
मुहब्बत के लिये महज़ क़ैद कोई हिफ़ाज़त नहीं

यह तो मुहब्बत नहीं

किसी का ज़ाईज हक़ छीन लेना तो मुहब्बत नहीं
ऐसी मुहब्बत तो फिर दुआओं में भी सलामत नहीं
इन्सानियत औ हमदर्दी में तो सिर्फ़ तबाही मिलेगी
बेहाली व फ़ाकाक़शी किसी के लिये अमानत नहीं

मधुर मिलन

निर्मल और पवित्र प्यार को नमन
एक दूजे की हसीं बाँहों में शयन
दो जान और एक हैं हमारे बदन
प्रेम आनन्द में हम दोनों हैं मगन

मधुर मिलन

जीवन साथी होने की है हमारी लगन
घर और परिवार की ओर हमारा गमन
ख़ुशियों औ विश्वास से है नीला गगन
हर हाल में सफल होगें हमारे ये जतन

मधुर मिलन

तन औ मन में है शहनाईयों का शगुन
बेक़रार दिलो दिमाग़ को अब है सुक़ून
एक दूसरे को ख़ुश रखने का है जुनून
एक दूजे के अहसास रहेंगे अब क़ानून

मधुर मिलन

हमारे प्यार में ऐसी होगी प्रेम अगन
सारे संसार में होगी प्यार की तपन
अब रस्म औ रिवाज़ की होंगी गलन
ज़माने में ख़त्म होगी प्यार से जलन

मधुर मिलन

सुहावनी चाँदनी रातें थी रंगीन
ऐतबार से मुलाक़ातें थी जहीन
सुबह औ शाम रहती थी हसीन
शिक़वे औ शिकायतें थी महीन

मधुर मिलन

मुहब्बत का दायरा हो गया सघन
निर्मल और पवित्र हो गया जहन
गिले व शिक़वों का हो गया दमन
तन मन में प्रेम का हो गया चलन

मधुर मिलन

एक दूजे का तन और मन से वरण
यादों के अहसास से चीत का हरण
मन में भावनायें औ विश्वास है चरण
अंग अंग हो गये एक दूजे की शरण

मधुर मिलन

हमारे मिलन के वक़्त दरिया हो गये नयन
विरह की व्याकुल वेदना का हो गया हनन
विचलित मन में विचारों का हो गया शमन
ख़ुशहाल आँगन में रोशन था चैन औ अमन

मधुर मिलन

रोम रोम में महकता हुआ प्रेम का चमन
अंग अंग में समाया एक दूसरे का बदन
सारे संसार से बेख़बर था हमारा ज़हन
हसीं सुहाग रात की तरह हमारा शयन

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

हाँ महबूब ने बहुत कुछ ग़लत किया ख़ुदा के सामने
महबूब की ख़ुशियाँ ही सब कुछ होती ख़ुदा के सामने
बेबस और बेक़रार होकर महबूब ने ख़ुदक़ुशी कर ली
रिवाज़ों से मजबूर महबूब का जवाब ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

महबूब मन से प्यार को ख़ुदा तो मानेगा ख़ुदा के सामने
तन मन से मुहब्बत करके कोई तो आये ख़ुदा के सामने
हर रोज दीवानों की मज़ार पर क्यूँ रोशन होते है चराग़
कोई तो मन से दीवाना बनकर दफ़्न हो ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

महबूब के ख़याल में महबूब का ख़याल ख़ुदा के सामने
तन व मन से शायर बनकर रहा महबूब ख़ुदा के सामने
कैसे नहीं दिल व दिमाग़ में असर कर देगी शेरो सुख़न
दिल से शायर बन कर तो आये महबूब ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

महबूब की ज़िन्दगी ज़ियारत की तरह ख़ुदा के सामने
मुहब्बत अक़ीदत और इबादत की तरह ख़ुदा के सामने
मुहब्बत फिर भी तड़प तड़पकर दम तोड़ देती है 'साथी'
शर्मसार और ईमानदार ख़ुदा है बेईमान ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

महबूब के दिल में मुहबूब ख़ुदा से बढ़ा ख़ुदा के सामने
ज़माने का ख़ुदा शर्मसार था महबूब के ख़ुदा के सामने
मुहब्बत इबादत औ अक़ीदत से दुआ जैसी हो जाये तो
दिल में ऐतबार से महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

मुहब्बत के सबूत

मेरी बेगुनाही का सबूत मेरे हाथ में जहर का प्याला है
महबूब के लिये हमेशा मेरा दिल औ दिमाग़ शिवाला है
अपने प्यार को अजर और अमर साबित करने के लिये
मेरे तन औ मन में जलती हुई प्रेम अगन की ज्वाला है

मुहब्बत के सबूत

'साथी' के हर पल के अहसास व जज़्बातों का रखवाला है
हर वक़्त मेरे तन और मन को रखता हसीन मतवाला है
महबूब मेरे ख़्वाबों और ख़यालों में इस तरह रहता हैं कि
मेरे अंग-अंग और रोम-रोम में प्यारा महबूब दिलवाला है

मुहब्बत के सबूत

मुहब्बत में हर तरह से है मेरी ज़िन्दगानी का दिवाला है
फक़त इसलिये ही मेरे मुँह में सूखी रोटी का निवाला है
कुर्बानी की हद तक प्यार को हर हाल में महफूज़ रखना
फिर भी महबूब को लगता है कि दाल में ज़रुर काला है

मुहब्बत के सबूत

महबूब के जज़्बात और अहसास का गुनाहगार हूँ
इंसानियत में मगर बेहद बेबस, मजबूर व लाचार हूँ
मुझे बेहद अज़ीज़ है मुहब्बत के ख़्वाब औ ख़याल
महबूब से मिलने को मैं भी तो बेचैन व बेक़रार हूँ

मुहब्बत के सबूत

मुहब्बत को ख़ुशहाल करने के लिये ईमानदार हूँ
वफ़ा व ऐतबार के लिये जहर पीने वाला प्यार हूँ
दरिया के दोनों साहिल का मिलना मुमक़िन नहीं
बेताबी में समंदर होने के लिये मैं विसाले यार हूँ

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

महबूब के दिल में महबूब ख़ुदा से बढ़ा ख़ुदा के सामने
जमाने का ख़ुदा शर्मसार था महबूब के ख़ुदा के सामने
मुहब्बत इबादत औ अक़ीदत से दुआ जैसी हो जाये तो
दिल में ऐतबार से महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

मज़हब और सारी कायनात से बेख़बर ख़ुदा के सामने
महबूब के ख़याल में महबूब का ख़याल ख़ुदा के सामने
हर रोज दीवानों की मज़ार पे क्यूँ रोशन होते है चराग़
कोई तो दिल से दीवाना बन, दफ़न हो ख़ुदा के सामने

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

मज़बूर हो कर महबूब ने ख़ुदक़ुशी की ख़ुदा के सामने
रिवाज़ों से मज़बूर महबूब का जवाब है ख़ुदा के सामने
मुहब्बत जब भी तड़प तड़पकर दम तोड़ देती है 'साथी'
शर्मसार और ईमानदार ख़ुदा है बेईमान ख़ुदा के सामने

मुहब्बत के सबूत

मेरा दिल और दिमाग़ उसके प्यार से हसीन दिलवाला है
फिर सारी कायनात में मेरा दिल व दिमाग़ दौलतवाला है
मेरे अंग-अंग और रोम रोम में प्यार की ख़ुश्बू ऐसी है कि
हर वक़्त मेरे दिल व दिमाग़ को रखता हसीन मतवाला है

मुहब्बत के सबूत

जालिम रस्मों व रिवाज़ के बंधनों का मेरे गले में ताला है
फिर भी मेरे मन में सात वचनों का बन्धन औ वरमाला है
महबूब मेरे ख़्वाबों व ख़यालों में इस तरह से रहता हैं कि
'साथी' के हर पल के अहसास औ जज़्बातों का रखवाला है

मुहब्बत के सबूत

तन्हाई व जुदाई में बेचैनी व बेबसी की जलती ज्वाला है
मेरा महबूब मेरे विरह की व्याकुल वेदना का हम प्याला है
मेरा महबूब इस तरह से मेरे घर व परिवार में शामिल है
शरीके हयात बनकर के हर हालात में मेरा हम निवाला है

मुहब्बत की निशानियाँ

शमा औ परवाने के इम्तिहान तक आ पहुँची है
चाहत व क़शिश इस निशान तक आ पहुँची है
आत्मा का परमात्मा से मिलना है पाक़ इबादत
मुहब्बत रुह बनकर आसमान तक आ पहुँची है

मुहब्बत की निशानियाँ

मुहब्बत क़यामत की दास्तान तक आ पहुँची है
दिल की आवाज़ अब ज़ुबान तक आ पहुँची है
प्यार के जज़्बात व अहसास इस तरह से है कि
घर व परिवार बनकर मकान तक आ पहुँची है

मुहब्बत की निशानियाँ

मुहब्बत सरहदें तोड़, इस ईमान तक आ पहुँची है
पाकिस्तानी सीमायें हिन्दुस्तान तक आ पहुँची है
अब तो जो भी होना होगा देखा जायेगा 'साथी'
बेक़रार मुहब्बत जंग के मैदान तक आ पहुँची है

मुहब्बत की निशानियाँ

मुहब्बत पाक़ हो कर इस सम्मान तक आ पहुँची है
ख़ुदा की इबादत में पाक़ अजान तक आ पहुँची है
एक दूसरे के लिए अमर बेल की तरह से हो जायें
मुहब्बत एक दूजे में इस अहसान तक आ पहुँची है

बेबस मुहब्बत

महबूब के बिना तन्हाई में बेचैन और बेक़रार हूँ
मुहब्बत के किये वादे निभाने के लिये लाचार हूँ
महबूब के ख़्वाबों और ख़यालों को दफ़्न कर के
पाक़ मुहब्बत का नाक़बिले बर्दाश्त गुनाहगार हूँ

बेबस मुहब्बत

दिल और दिमाग़ से बेहद बेजान और बेज़ार हूँ
इस तरह से ज़िन्दा रहकर के मैं एक मज़ार हूँ
मेरी रग रग में बसा रहेगा मुहब्बत का अहसास
ज़िन्दा रहने के लिये ख़ुद से ख़ुद का क़रार हूँ

बेबस मुहब्बत

मज़बूरियों में पाक़ मुहब्बत के लिये मैं दाग़दार हूँ
बेताब उल्फ़त को दफ़्न करने के लिये शर्मसार हूँ
मुझ को भी अपने कर्मों के फल तो ज़रूर मिलेगें
उसके लिये ग़लत, ख़ुदा के यहाँ तो समझदार हूँ

मुहब्बत के सबूत

जन्मों जन्मों के लिए महबूब का बेसब्र इंतज़ार हूँ
ऐसी अजर और अमर मुहब्बत के लिए ऐतबार हूँ
मुहब्बत के लिए सिर्फ़ ऐसे हैं मेरे पाक़ ख़यालात
शजर की फ़ितरत औ कैफ़ियत जैसा वफ़ादार हूँ

मुहब्बत के सबूत

बेचैन और बेक़रार दिलो दिमाग़ के लिये क़रार हूँ
महबूब की सांसों में इस तरह प्राणों का संचार हूँ
ज़मीन आसमाँ का मिलना कभी तो मुमक़िन होगा
मुहब्बत के लिये दिल व दिमाग़ से ऐसा बीमार हूँ

मुहब्बत के सबूत

अक़ीदत और इबादत से करवा चौथ का त्यौहार हूँ
जज़्बात और अहसास से महबूब के लिये ऐतबार हूँ
इश्क़ ख़ुदा है और ख़ुदा आसमाँ में रहता है 'साथी'
रुह बन कर के मैं आसमाँ होने के लिये बेक़रार हूँ

बेक़रार मुहब्बत

वह नाज़ायज़ को भी फिर ज़ायज़ मानता है
बेक़रार होकर जब भी अपना हक़ माँगता है
रस्मो रिवाज़ के बन्धनों को कहाँ समझता है
ये नादाँ दिल अच्छा औ बुरा कहाँ जानता है

बेक़रार मुहब्बत

तन औ मन बेक़रार हो करके जब डोलता है
ख़ामोश निग़ाहों से फिर बहुत कुछ बोलता है
चाहत और क़शिश में असर ऐसा होता है कि
बेक़रार हो कर रस्मों के बन्धन भी खोलता है

बेक़रार मुहब्बत

जब बेगुनाह अपने महबूब से माफी माँगता है
फिर तो बेगुनाह भी मुज़रिम बनकर भागता है
कसाई से भी बड़ कर क़ातिल होता है 'साथी'
जो बेक़रार हो कर प्यार को बेरहम मारता है

मुहब्बत ही सब कुछ

प्यार की दुहाई दे कर रहमो करम माँगता है
यक़ीनन वो दिल से प्यार को ख़ुदा मानता है
ख़त्म करके अपने सारे खास रिश्ते नातों को
प्यार को ही अपना भरापूरा परिवार मानता है

मुहब्बत ही सब कुछ

बेइन्तहा इश्क़ में जब भी बेख़ुदी से सोचता है
फिर महबूब करवटें बदलकर रातभर जागता है
लाचार और शर्मशार हो जाती है पाक़ मुहब्बत
बेक़ुसूर महबूब जब परेशाँ होकर हार मानता है

मिसाले मुहब्बत

मेरी ज़िन्दगी उसकी मुहब्बत की अमानत रहे
मेरी बेरहम मौत मेरी वफ़ाओं की ज़मानत रहे
मेरे लिये महबूब के एक पल की नाराजगी भी
मेरी ज़िन्दगी में दोजख़ व बेरहम क़यामत रहे

मिसाले मुहब्बत

दुआओं में मुहब्बत ख़ुशहाल और सलामत रहे
फिर तो इश्क़ दिल में ख़ुदा की ज़ियारत रहे
जब जीना मुश्क़िल हो जाये एक दूजे के बिना
एक दूजे की जाँ एक दूजे के लिये इनायत रहे

मिसाले मुहब्बत

हमारी मुहब्बत में हमदर्दी और इन्सानियत रहे
फिर तो प्यार का सफर ख़ुदा की इबादत रहे
तन-मन इतने निर्मल और पवित्र हो जाये कि
अजर-अमर प्यार की क़शिश और चाहत रहे

मिसाले मुहब्बत

मुहब्बत में ऐसी बेचैन व बेक़रार मुलाक़ात रहे
हर पल लबों पर मुलाक़ातों की शिकायत रहे
मुहब्बत ऐसी बेशुमार व बेमिसाल हो जाये की
'साथी' कायनात में ताज महल जैसी ईमारत रहे

सावन का अहसास

मौसम रंग बिरंगा हो गया, मन बसन्ती हो गया
आया सावन झूम के, तन और मन बैरी हो गया
फूल खिले उपवन में, मोर, पपीहा, कोयल बागों में
ऐसा ख़ुशगवार मौसम, नैनों की नींद चुरा गया

सावन का अहसास

अलसाये नैना व मुरझाया चेहरा भी खिल गया
पिया के अहसास से रोम-रोम भी निख़र गया
गुलशन में गुलों की हसीन रंगत और ख़ुशबू से
शीतल पवन का ये झौका, तन मन में समा गया

सावन का अहसास

पुरवाई हवाओं से तन औ मन हरियाला हो गया
ऐसे मौसम का नज़ारा, पिया की याद दिला गया
सावन में विरह के गीत गाकर, सहेलियाँ छेड़ रही
ऐसे में तन तो काबू में, लेकिन मन बेकाबू हो गया

सावन का अहसास

साजन के ख़याल से दिल ख़ुद से बेग़ाना हो गया
सुहाग की सेज पे मन साजन का दीवाना हो गया
रोम रोम औ अंग अंग में प्यार के हसीं अहसास से
सुहावनी चाँदनी रातों में मेरा मन मस्ताना हो गया

साजन का अहसास

रिमझिम बारिश की बूँदों में सावन का झूला है
पिया की याद में मैंने अपना सब कुछ भूला है
पिया मिलन की आस में विरह की ऐसी वेदना
सतरंगी चूड़ियों की खनक में मेरा तन डोला है

साजन का अहसास

मेरे तन व मन पर पिया के प्यार का चोला है
मेरा निर्मल औ पवित्र,तन व मन बहुत भोला है
हाथों में सुहाग की मेहन्दी और पाँवों में पायल
इन रस्मों ने पिया से मिलने का राज खोला है

साजन का अहसास

सुहानी चाँदनी रातों में हसीन यादों का मेला है
सुहाग की सेज पर मेरा तन और मन अकेला है
साजन तन औ मन में इस तरह से रहता है कि
रोम रोम, अंग अंग में उसके अहसास का रैला है

साजन का अहसास

मेरा साजन मेरे दिल में सपनों का राजकुमार है
यह सावन का महीना व साजन का इन्तज़ार है
माथे पर बिन्दिया औ माँग में सुहाग का सिन्दूर
पिया के लिये सावन के व्रत व पावन त्यौहार है

साजन का अहसास

पिया के अहसास को मैंने तन व मन में घोला है
फिर मन की वीणा ने प्रेम का मधुर गीत बोला है
सिर्फ़ साजन के संग में गुज़ारे हुये हसीन पल ही
मन मन्दिर में ऐसी अनमोल विरासत का झोला है

मुहब्बत की अहमियत

वो सारी कायनात से मुझे ऐसे बेख़बर करता है
इस तरह वह मेरे दिल और दिमाग़ में रहता है
मज़बूर, बेताब और बेक़रार महबूब के अहसास से
मेरा दिल इन्सानियत में लाचार हो कर मरता है

मुहब्बत की अहमियत

नफ़रती लहरों से दरिया तबाही बनकर बहता है
मुहब्बत की चंद बूंदों से प्यासा मन भी भरता है
हर हाल में क़ुदरत अपना असर ज़रूर दिखाती है
जब शमा रोशन तो परवाना भी ज़रूर जलता है

मुहब्बत की तासीर

लोहा पिघलता है पत्थर दिल इंसान बदलता है
चाहत व क़शिश से प्यार का आँगन महकता है
एक पल के लिये भी महबूब का नाराज हो जाना
सिर्फ़ इस क़यामत से मेरा दिल दिमाग़ डरता है

मुहब्बत की तासीर

नाज़ाईज हक़ के लिये ज़ाईज होकर झगड़ता है
'साथी' नादाँ दिल ये ग़लतफहमी कहाँ समझता है
प्यार की अहमियत इतनी अनमोल है उसके लिये
ख़ास अपना भी फिर ज़ालिम बन कर अखरता है

मुहब्बत की तासीर

महबूब का ख़याल मेरे तन मन में ऐसे बसता है
मुहब्बत को इस तरह से अपने दिल में रखता है
विरह की विचलित वेदना इतनी सितमग़र है कि
'साथी' रातभर करवटें बदल बदल कर तड़पता है

मुहब्बत की तासीर

ज़मीन और आसमान के मिलने की बात करता है
मुहब्बत में इस तरह से दीवाना व पाग़ल रहता है
मुहब्बत को ख़ुदा की रहमत और करम समझ कर
इबादत औ अक़ीदत से ही प्यार दिल में बसता है

मन ही सब कुछ

ख़ूबसूरत तन को तो एक दिन ख़ाक हो जाना है
पवित्र औ निर्मल मन को ही हमेशा याद आना है
तन को हासिल कर सकते है दौलत की बदौलत
ख़ास बात तो महबूब के प्यारे मन को ही पाना है

मन ही सब कुछ

प्यार को अहसास औ जज़्बात से दिल में आना है
दो बदन को मुहब्बत में फिर एक जान ही माना है
मन में मन का नहीं है तो बेज़ान होगा तन व मन
'साथी' तन की चाहत में तो तन को ही जलाना है

मन ही सब कुछ

मुहब्बत का दिल में अक़ीदत और इबादत होना है
मुहब्बत की आत्मा को उस वक़्त परमात्मा माना है
तन से तो साथ है मगर मन से मिलन नहीं होता
ऐसे रिश्तों को फिर नर्क जैसा जी कर निभाना है

मन ही सब कुछ

हसीन तन की मोहताज नहीं होती है पाक़ मुहब्बत
मन की कल्पनायें होती है बेहद हसीन व ख़ूबसूरत
जब मन में रहती है महबूब की तमन्नायें औ हसरत
ख़ुशी से आबाद रहती है 'साथी' के दिल की क़ुदरत

आपके लिए

दश्ते तन्हाई हो गया आपकी क़ुर्बत के लिए
क्या इतने ग़म काफी नहीं मुहब्बत के लिए
ग़म अगरचे जान लेवा है यह मालूम है मुझको
मगर ये ग़म भी हैं तो आपकी उल्फ़त के लिए

आपके लिए

जज़्बात तो ज़िन्दा है आपकी मुहब्बत के लिए
परवाने भी मचलते हैं शमा की ज़ीस्त के लिए
यही सोच कर रोज़ अश्क़ पीता रहा चुपचाप
आख़िर ज़िन्दा भी है आपकी हसरत के लिए

आपकी वज़ह से

वो कुछ तो बेवज़ह ख़फ़ा से हैं
ज़िन्दगी बहुत कुछ जफ़ा से हैं
मेरे जीने और मरने की कोशिशें
सिर्फ़ ये आपके लिये वफ़ा से हैं

आपकी वज़ह से

अपकी हँसी तो बादे सबा से हैं
आपके चेहरे का नूर दवा से हैं
बीमार दिल को मिले चैनो सुकूँ
आपके ख़यालात फिर हवा से हैं

आपकी वज़ह से

मेरी नादान ग़लतियाँ ख़ता से हैं
परवाने का रिश्ता तो शमा से हैं
दिल हैरान औ परेशान है 'साथी'
उसके वादे इरादे तो दग़ा से हैं